प्रतिमुद्रा

• अंक 3 • हिन्दी पत्रिका • जनवरी 2022

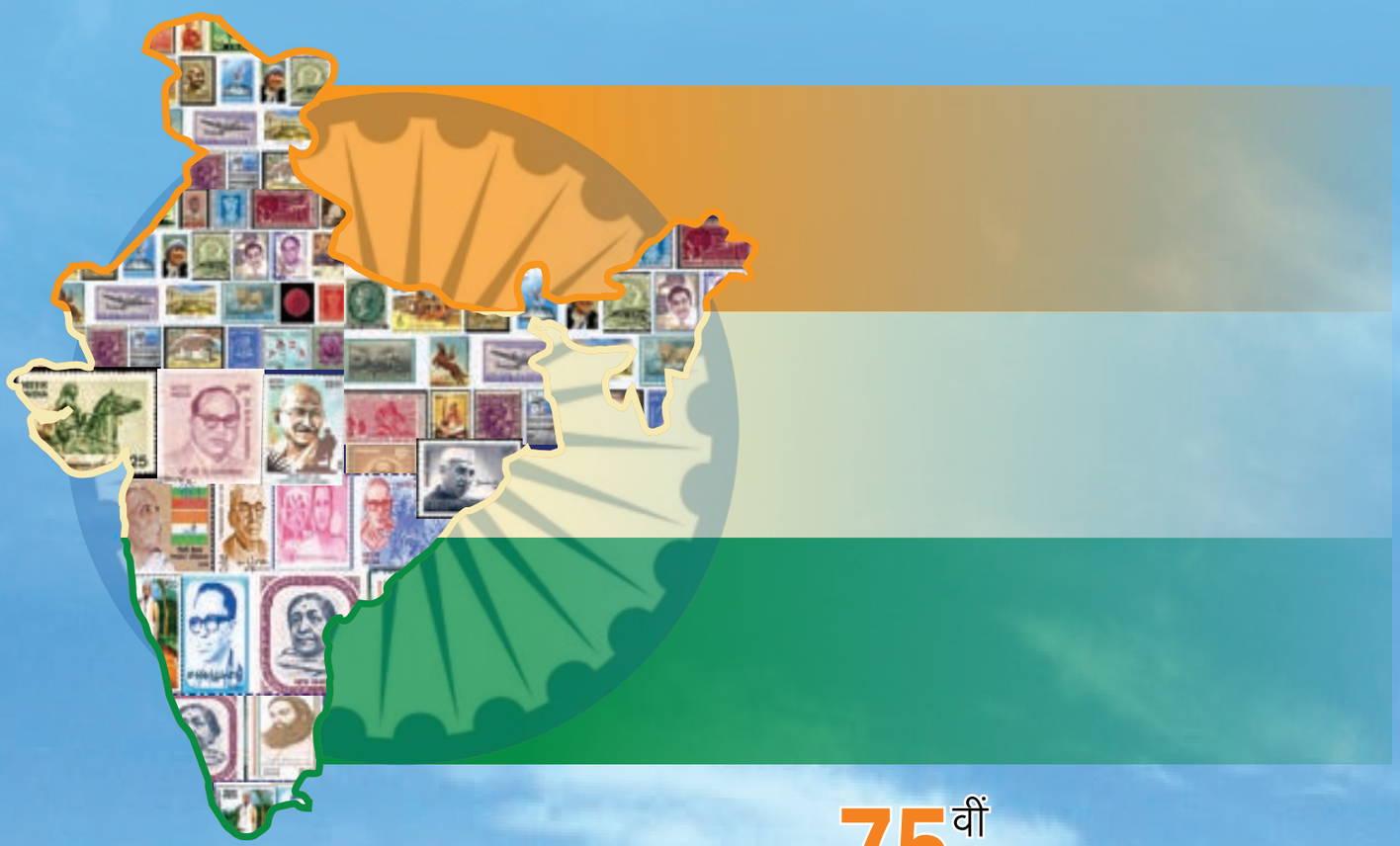

75 वीं
आजादी का
अमृत महोत्सव

प्रतिभूति मुद्रणालय
(भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड की इकाई)

SECURITY PRINTING PRESS
(A unit of Security Printing and Minting Corporation of India Ltd)

आदरणीय श्री बोलेवर बाबु, मुख्य महाप्रबंधक महोदय तथा अन्य कार्यपालक अधिकारी द्वारा हिन्दी पत्रिका “प्रतिमुद्रा” अंक 2 का विमोचन

आपकी प्रतिक्रिया

spp.hyd @spmcil.com

प्रतिमुद्रा ' अंक 2021 प्राप्त हुआ । सर्वप्रथम नराकास (उपक्रम) द्वारा राजभाषा पुरस्कार के लिए हार्दिक शुभकामनाएं । पूर्ण विश्वास है कि पुरस्कार प्राप्त करने का यह क्रम आगे भी इसी प्रकार बना रहेगा श्रीमती संध्या की कविता ' जीवन की उलझन ' , श्री अंबा दास का आलेख ' समृद्ध भारतीय संस्कृति ' तथा श्री मधु वर्मा के आलेख CORONA Commists SUICIDE , आपका आलेख SPPH - HR Activities - 2020 अत्यंत उल्लेखनीय है । श्री बोलेवर बाबु के आलेख ' Management Principles Through Experience ' ने विशेष रूप से प्रभावित किया । प्रबंधन (Management) के इन सिद्धांतों का अनुपालन करके कोई भी व्यक्ति अपने व्यक्तिगत एवं प्रोफेशनल जीवन में सफलता पा सकता है । पत्रिका प्रकाशन में राजभाषा अनुभाग का परिश्रम स्पष्ट रूप से झलक रहा है । आशा है कि ' प्रतिमुद्रा ' का आगामी अंक और भी नए विषयों के साथ प्रकाशित होगा । राजभाषा कार्यान्वयन में हमारा कॉरपोरेशन ईसीआईएल सदैव आपके साथ है । शुभकामनाओं सहित

(डॉ. राजनारायण अवस्थी)
वरिष्ठ अधिकारी(राभा)
ईसीआईएल,हैदराबाद

आपके उद्यम की गृह - पत्रिका ' प्रतिमुद्रा ' का नवीनतम अंक प्राप्त हुआ । सुंदर मुखपृष्ठ से सज्जित पत्रिका के प्रकाशन लिये प्रबंधन और संपादक मंडल को साधुवाद । सबसे पहले वर्ष 2019-20 के दौरान उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिये नगर राजभाषा कार्यान्वयन की ओर से ' राजभाषा कप ' के लिये चुने जाने पर बधाई । पत्रिका के माध्यम से आपके कार्यालय में संपन्न हिंदी पक्षोत्सव , संविधान दिवस सहित विभिन्न गतिविधियाँ और प्रशिक्षण कार्यक्रमों की जानकारी प्राप्त हुई । साथ ही , कोविड -19 महामारी से बचाव के उपाय संबंधी लेख भी जानकारीप्रद हैं । अन्य रचनाएँ पठनीय हैं । पत्रिका के अगले अंक की प्रतीक्षा में -

(होमनिधि शर्मा)
उप महाप्रबंधक
सदस्य सचिव, नराकास(उपक्रम)
हैदराबाद-सिकन्दराबाद

प्रतिमुद्रा

हिन्दी पत्रिका ● अंक 03 ● जनवरी 2022

अनुक्रमणिका

संदेश		3
आलेख		
ऊर्जावान – कार्यस्थल	श्रीमती देवकी प्रधान	9
स्वाधीनता आन्दोलन और प्रतिबंधित हिन्दी कविताएँ	डॉ. रुस्तम राय	10
गणतंत्र दिवस समारोह	कार्यालय की सौजन्य से	16
प्रभावी बातें और व्यक्तित्व विकास	श्री श्रीकर प्रधान	18
अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस विशेषांक	श्री अमरजीत राय	21
अतिथि देवो भवः	कार्यालय की सौजन्य से	24
गौरवपूर्ण पल	कार्यालय की सौजन्य से	32
कहानी		
शिक्षा का महत्व-बाल साहित्य	श्री शुभंकर राम	34
ईश्वरीय प्रेम कथा	श्रीमती डी. प्रमीला सागर	35
राष्ट्रीय त्योहारः मकर संक्रांति	श्री वी. नरेश	37
काव्य संग्रह		
माँ	श्रीमती संध्या रानी	39
महामारी	श्रीमती पुजा सिंह	39
निरीक्षणम	श्री मधु बर्मा	40
नव्वुकला	सुश्री सुनिता	41
नारी का सम्मान करो	श्री एस. सुधाकर राव	42
अन्य रचना		
Security Printing Press	Shri Chinmoy Garai	43
Unconditional Prayers	Shri K. Satyanarayana	47
Kind Hearted Persons	Shri K. Satyanarayana	47

संरक्षक

श्री श्रीकर प्रधान

मुख्य महाप्रबंधक

उपसंरक्षक

श्री वी. बालाजी

अपर महाप्रबंधक(मा.सं)

परामर्शदाता

श्री डी. रवि कुमार

प्रबंधक(मा.सं.)

संपादक मंडल

श्री अमरजीत राय

सहायक प्रबंधक(राभा)

श्री शुभंकर राम

पर्यवेक्षक(राभा)

श्री बी. नरेश

कनि. कार्यालय सहायक

(पत्रिका में प्रकाशित लेख, कहानी, कविताएँ एवं विचार लेखकों के अपने हैं । इनसे संपादक अथवा कंपनी का सहमत होना अनिवार्य नहीं है)

राजभाषा कार्यान्वयन हेतु विशिष्ट पुरस्कार

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), हैदराबाद-सिकंदराबाद के लघु कार्यालय की श्रेणी में वर्ष 2020-21 के लिए उत्कृष्ट राजाभाषा कार्यान्वयन के लिए द्वितीय पुरस्कार (राजभाषा ट्राफी) प्रदत्त किया गया है।

तृप्ति पी. घोष
TRIPTI P. GHOSH
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
Chairman & Managing Director
भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड
Security Printing & Minting Corporation of India Limited

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक के संदेश .....

प्रिय साथियों,

गृह पत्रिका "**प्रतिमुद्रा**" के माध्यम से आप सभी के साथ संवाद करने का यह सुनहरा अवसर है। प्रतिमुद्रा के तृतीय अंक के प्रकाशन पर आप सभी रचनाकारों को बहुत-बहुत बधाई। आप सभी के कठिन परिश्रम तथा लगन के फलस्वरूप ही यह पत्रिका हमारे समक्ष प्रस्तुत हो पाई है। इस पत्रिका के प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य न केवल गृह मंत्रालय द्वारा जारी आदेशों का अनुपालन करना है अपितु यह हमारे कर्मचारियों के अन्तर्मन में छिपी सृजनशीलता को उजागर करने के लिए श्रेष्ठ मंच प्रदान करता है। वास्तव में कोरोना काल की इन कठिन परिस्थियों में इस प्रकार की रचना मन को शीतलता प्रदान करती है।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति(उपक्रम) के तत्वाधान में प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहा है तथा नराकास लघु कार्यालय श्रेणी के अंतर्गत कई पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं। इस उल्लेखनीय कार्य हेतु आप सभी को हार्दिक बधाई तथा आशा करती हूँ कि भविष्य में इसी भावना को बरकरार रखते हुए सफलता की और नई उचाइयाँ प्राप्त करेंगे।

मै यह भी आशा करती हूँ कि भविष्य में प्रकाशित होने वाली पत्रिकाओं के लिए भी आप किसी न किसी रूप में अपना योगदान देते रहेंगे तथा अन्य कर्मियों को भी प्रोत्साहित करते रहेंगे। इसी के साथ पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य एवं निरंतर प्रकाशन के लिए मेरी शुभकामनाएँ।

तृप्ति घोष

(तृप्ति पी.घोष)
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

एस .के . सिन्हा
S . K . Sinha
निदेशक (मा.सं.)
Director (HR)
भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड
Security Printing & Minting Corporation of India Limited

निदेशक (मानव संसाधन) के संदेश .....

"**प्रतिमुद्रा**" हिन्दी पत्रिका राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में अच्छी पहल है। पत्रिका के तृतीय अंक का प्रकाशन आप सभी लोगों के प्रयास के कारण ही सम्भव हो पाया है। आज यह पत्रिका सभी स्टाफ सदस्यों के मध्य परस्पर विचार-विनिमय को मंच प्रदान करने का बेजोड़ माध्यम बन चुकी है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस पत्रिका में संकलित लेखों के माध्यम से सभी पाठकों को प्रेरणा मिलेगी।

कोरोना के नए स्वरूप ओमीक्रॉन से आप सभी अवगत होंगे। इस मुश्किल घड़ी में हम सब साथ हैं और सभी उम्मीद की किरण तलाश रहे है। वास्तव में आज की परिवर्तित जीवन शैली में कार्यस्थल की स्वच्छता, सामाजिक दूरी, ऑनलाइन कार्य पद्धति तथा संबंधित सरकारी आदेशों का अनुपालन करते हुए कोरोना के बदलते स्वरूप के साथ ही जीने की आदत डालनी होंगी। सतर्क रहे, सदैव मास्क पहने तथा सामाजिक दूरी का पालन करे।

इस पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मैं राजभाषा अनुभाग प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद को शुभकामनाएँ देता हूँ।

(एस.के. सिन्हा)
निदेशक (मानव संसाधन)

अजय अग्रवाल
Ajay Agrawal
निदेशक (वित्त)
Director (Finance)
भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड
Security Printing & Minting Corporation of India Limited

निदेशक (वित्त) के संदेश .....

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद अपनी गृह पत्रिका **"प्रतिमुद्रा"** का तृतीय अंक प्रकाशित कर रहा है। राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में यह पत्रिका मील का पत्थर साबित होगी। भारत सरकार संविधान के तहत अपना कार्य सम्पादित करती है तथा संविधान में वर्णित प्रत्येक धारा का अनुपालन करना हमारा पुनीत कर्तव्य है। आशा करता हूँ कि भविष्य में भी इसी समर्पण भाव, निष्ठा और कार्यकुशलता से अपना कार्य करते हुए आप सभी कार्यालय का नाम शिखरासीन रखने में कामयाब होंगे।

कोरोना का नया स्वरूप हालांकि चिंतित करने वाला है लेकिन अकल्पनीय नहीं हैं। हमें अपने अंधेरे समय में भी प्रकाश पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। हमारे पास पिछले वर्षों के अनुभव से प्राप्त सबक हैं। निःसंदेह जल्द ही हम इन परिस्थितियों से उबरेंगे। हम आशा करते हैं कि "प्रतिमुद्रा" उदीयमान सूरज की तरह देदीप्यमान हो जो प्रतिदिन हमारे जीवन में नई ऊर्जा तथा उमंग लाए।

संपादक मंडल तथा सभी रचनाकर्मियों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

अजय अग्रवाल

(अजय अग्रवाल)
निदेशक (वित्त)

विनय कुमार सिंह , भा .रा .से.
Vinay Kumar Singh , I.R.S
मुख्य सतर्कता अधिकारी
Chief Vigilance Officer
भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड
Security Printing & Minting Corporation of India Limited

मुख्य सतर्कता अधिकारी *के संदेश* .....

मुझे असीम प्रसन्नता हो रही है कि प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद अपनी गृह प्रत्रिका 'प्रतिमुद्रा' का तृतीय अंक प्रकाशित करने जा रहा है। साथ ही इसके माध्यम से अपनी बात रखने में आपार खुशी का अनुभव कर रहा हूँ। गृह पत्रिका केवल किसी संस्थान का व्यक्तिगत विचार नहीं होता है बल्कि उसमें किसी भी संस्थान की कार्य संस्कृति का संचित प्रतिबिम्ब होता है। गृह पत्रिका कर्मचारियों को साहित्य लेखन का अवसर प्रदान ही नहीं करती अपितु उनकी बैद्धिक क्षमताओं को प्रर्दशित करने का उचित मंच भी प्रदान करती है। पत्रिका के प्रकाशन में प्रायः सभी कर्मचारियों का प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से सहयोग होता है। भारत एक बहु-भाषिक देश है और हिंदी सभी प्रान्तों को एक सूत्र में पिरोने का कार्य कर रही है। हिंदी के इसी सामासिक गुण के कारण संविधान निर्माताओं ने हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया है। पिछले दो वर्षो से हम सभी कोविड महामारी से लड़ रहे हैं, किन्तु अपने कर्तव्यों और संवैधानिक दायित्वों का पालन करने से चुके नहीं है। राजभाषा हिन्दी का सर्वांगिक विकास करना हमारा संवैधानिक दायित्व है। गृह प्रत्रिका का प्रकाशन राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में अहम भूमिका निभाएगा।

अतः आशा करता हूँ कि भविष्य में भी इकाई में इसी तरह राजभाषा के दायित्वों का पालन होगा तथा यह पत्रिका रचनात्मक एवं सृजनात्मक रूचि की अभिव्यक्ति का माध्यम बनेगी। मैं गृह पत्रिका के निरंतर एवं सफल प्रकाशन की कामना करते हुए सम्पादक मंडल को बधाई देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित,

विनय कुमार सिंह
मुख्य सतर्कता अधिकारी

संरक्षक की कलम से .....

नमस्कार,

असीम प्रसन्नता का विषय है कि प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वाधान में वार्षिक पत्रिका 'प्रतिमुद्रा' (अंक-3) का प्रकाशन करने जा रहा हैं।

भारत सरकार के पूर्ण स्वामित्वाधीन उद्यम 'प्रतिभूति मुद्रणालय' हैदराबाद अपनी गृह पत्रिका का प्रकाशन कर राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में एक अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं अहम भूमिका निभाता है। 'प्रतिमुद्रा' में विभिन्न प्रकार के लेखों का समायोजन किया गया है, जो कि इकाई के अधिकारियों एवं कर्मचारियों में साहित्य के प्रति अभिरूचि के साथ ही राजभाषा के संदर्भ में उनके सजग कार्यत्व निर्वाहन को दर्शाती है। वर्तमान समय में हिंदी की लोकप्रासंगिता और उपयोगिता को नकारा नहीं जा सकता है। आज के बदलते दुनिया में हिंदी को सरकारी काम-काज में ज्यादा से ज्यादा प्रयोग हो, इसके लिए हमें प्रौद्योगिक टूलों की जानकारी एवं प्रयोग ही हिंदी के महत्व एवं समझ को लगातार बढ़ा सकता है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि प्रत्रिका में प्रकाशित सभी लेख हमारे पाठकगण के लिए अवश्य ही प्रासंगिक एवं उपयोगीं सिद्ध होंगे। मैं 'प्रतिमुद्रा' के साथ प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से जुड़े प्रत्येक अधिकारी एवं कर्मियों को शुभकामनाएँ देने के साथ-साथ इसके सम्पादक मंडल को भी बधाई देता हूँ एवं इसके उज्ज्वल भविष्य तथा निरन्तर प्रकाशन की कामना करता हूँ।

(श्रीकर प्रधान)
मुख्य महाप्रबंधक

संपादक की कलम से .....

प्रिय पाठकों,

"प्रतिमुद्रा" का तृतीय अंक आपके सामने प्रस्तुत करने में काफी प्रसन्नता हो रही है। इस पत्रिका को आप सभी के सहयोग से ही हम ससमय प्रकाशित कर पाएँ। शायद आपके योगदान के बिना यह संभव नहीं हो पाता।

वास्तव में रचनाएँ मानव मन में छिपी व्यक्तित्व को उभारने का सर्वोत्तम साधन है तथा पत्रिका इस कला को अन्य पाठकों के समक्ष रखने का माध्यम है। रचना की कोई सीमा नहीं होती और ना कोई उम्र। रचना तो बस मन तथा शरीर के सामंजस्य को बेहतर बनाने की कला है। अक्सर मनुष्य बाहरी दुनिया के आडम्बर तथा भय से आतंकित होकर मन की भावना को जग जाहिर नहीं कर पाता। किन्तु रचना एक ऐसी कला है जो प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से उन भावनाओं को बेबाकीपन से पूरी दुनियाँ के समक्ष प्रस्तुत करने का सामर्थ्य रखती है। रचनाएँ कभी भी अमीर-गरीब में भेद नहीं करती। शायद यही वजह है कि हम अपने समाज में फैली दुष्कृतियों को रचना के ऐनक से स्पष्ट देख पाते हैं।

अतः आपसे विनम्र अनुरोध है कि आप यूँ ही आगामी प्रकाशित होने वाले अंकों हेतु रचनाएँ हमें भेजते रहें जिससे कि पत्रिका को और गुणवत्तापूर्ण बनाया जा सके।

पत्रिका से संबंधित आप सभी की प्रतिक्रियाएँ एंव सुझाव आमंत्रित हैं।

आपके स्नेह और योगदान के लिए पुनः एक बार शुक्रिया।

खुश रहें, स्वस्थय रहें।

धन्यवाद।

(अमरजीत राय)

सहायक प्रबंधक(राभा)

ऊर्जावान – कार्यस्थल

वैसे तो प्रतिदिन दफ्तर में कम से कम आठ घंटे बिताते हैं और यही हमारी दिनचर्या बन जाती है। सुबह शीघ्र उठते ही अपने घर के कार्य समाप्त कर समय पर कार्यालय पहुँचना होता है। हफ्ते में छह दिन कार्य करना तथा सप्ताहांत में एक दिन की छुट्टी का इंतजार करते हुए खुश होना कि आराम करेंगे। परन्तु क्या हफ्ते का एक दिन ही हमारा जीवन है? हमारा जीवन प्रतिपल खुशहाल रहना है। ऊर्जावान बने रहना तथा तनाव मुक्त जीने के लिए हमारे कुछ नुश्खे है :-

* दिन की शुरूआत घर से होती है। अतः अपने घर का वातावरण स्वच्छ और खुशनुमा बनाए रखें। हमेशा साफ-सुथरे सुन्दर परिधान पहने एवं सदा सकारात्मक रहें। नकारात्मक वातावरण से स्वयं को दूर रखें।
* प्रत्येक कार्य की शुरुआत ईश्वर से होती है, इसलिए उनका ध्यान कर कार्य आरंभ करें। सभी कार्य अच्छी तरह संपन्न होंगे। चाहे घर के हो या कार्यालय के ।
* कार्य ही पूजा है अतः मन्दिरों के भाँति हम जहाँ भी कार्य करें, उसे साफ-सुथरा रखें।
* अपनी कार्य की योजना बनाए रखें, प्रातः काल पूरे दिन के कार्य की योजना बनाएँ तथा उसे अपनी जिम्मेदारी समझकर उसका निष्पादन करें।
* जहाँ कार्य करने का सुअवसर मिला है। उसका का सम्मान करें।
* यदि कार्य टीमवर्क(सामूहिक कार्य) हो, तो उसे अपने सहकर्मी के साथ मिलकर करें। अगर कार्य के दौरान कुछ समस्याएँ आती हैं, तो आपसी संवाद के माध्यम से उसका निराकरण करें। हमेशा सकारात्मक रहें।
* यदि कार्य से तनाव हो, तो थोड़ा अल्पावकाश ले और तनावमुक्त रहें।
* आज के बदलते परिवेश में स्वयं को समय के साथ सामंजस्य बनाएँ रखे तथा हमेशा नई चीजें सीखने की कोशिश करते रहें।
* तनाव मुक्त रहने के लिए प्रतिदिन बीस से तीस मिनट योग का अभ्यास करें।
* अपने कार्य के प्रति जागरूक रहें और ऐसा कार्य करें जो साफ सुथरा तथा चुनौतीपूर्ण हो।
* एक दूसरे का परस्पर सम्मान करें। कहावत है कि सम्मान देने से सम्मान मिलता है।
* वैसे प्रत्येक व्यक्ति में कुछ न कुछ गुण होते हैं, उसे आपस में साझा करें।
* कार्यस्थल पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लें।
* अंतःकक्ष और बहिर्कक्ष खेलों में प्रतिभागिता करें। ताकि उत्साह तथा ऊर्जा सदैव बनी रहेगी।

* * *

--- श्रीमती देवकी प्रधान

स्वाधीनता आंदोलन और प्रतिबंधित हिन्दी कविताएं

स्वाधीनता आंदोलन में साहित्य, स्वतंत्रता, प्रेस और प्रतिबंधत की युगान्तरकारी भूमीका रही है।

कहना न होगा कि अब तक भारतीय साहित्य पर अंग्रेजीराज और स्वाधीनता आन्दोलन के प्रभावों के अध्ययन की परम्परा रही है। आज इस बात की आवश्यकता है कि अंग्रेजीराज के उन्मूलन और स्वाधीनता आन्दोलन को गतिशील करने में भारतीय साहित्य की भूमिका की पहचान की जाए। निश्चय ही, इससे भी अधिक रोचक होगा कि अंग्रेजीराज के दमनमूलक कृत्यों और स्वाधीनता आन्दोलन के विकास की विभिन्न अवस्थाओं, क्रान्तिकारी गतिविधियों और आन्दोलनों का अध्ययन अंग्रेजीराज द्वारा प्रतिबन्धित साहित्य के माध्यम से किया जाए। इसमें किसी को सन्देह नहीं होगा कि ब्रिटिशराज के उन्मूलन और स्वाधीनता आन्दोलन में भारतीय साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका रही है, लेकिन इतना जरूर है कि प्रतिबन्धित हिन्दी कविताओं में वर्णित स्वाधीनता आन्दोलन के क्रान्तिकारी गतिविधियों और अंग्रेजीराज के दमनचक्रों के चित्र न केवल हमारे मर्म को स्पर्श करते हमारी सुप्त चेतना को झकझोरते हैं, बल्कि अपनी विश्वसनीयता में हमें आश्वस्त भी करते हैं। असल में, स्वाधीनता आन्दोलन के विकास एवं विस्तार के साथ - साथ अंग्रेजी सरकार की कोपदृष्टि का प्रसार भी हुआ। अंग्रेजी सरकार भारतीय समाचार पत्रों के नियमन से सम्बन्धित अधिनियम 1799 ई. में पारित कर दिया था, जिसे आवश्यकतानुसार निरन्तर दमनमूलक बनाया जाता रहा। लेकिन पुस्तकों के प्रतिबन्धन का सिलसिला बंग - भंग आन्दोलन के साथ शुरू हुआ। अंग्रेजीराज ने प्रतिबंधित के इन काले कानूनों को धीरे - धीरे अधिक कठोर बनाया। इसी कड़ी के रूप में 1908 और 1910 में प्रेस अधिनियम में संशोधन किया गया। फलस्वरूप अंग्रेजी सरकार राज विरोधी इतिहास, राजनीति, साहित्य आदि विषयों की पुस्तकों से लेकर पत्र - पत्रिकाओं और छोटे - छोटे इश्तहारों तक को भी जब्त करने लगी। अब तक प्राप्त तकरीबन चार सौ प्रतिबन्धित कविताओं के संकलनों में बलिदान की मर्मस्पर्शी छवियां देखने को मिलती हैं। बहुत ऐसी कविताएं हैं जिनके माध्यम से भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन के इतिहास और आजादी के शहीदों से हमारा परिचय होता हैं। कुछ कविताओं में स्वाधीनता आन्दोलन, के दौरान चल रही क्रान्तिकारी गतिविधियों, घटनाचक्रों, का वर्णन मिलता है तो कुछ में अंग्रेजी वस्तुओं के बहिष्कार और स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग पर बल दिया गया है। इसी क्रम में असहयोग और सत्याग्रह की चर्चा भी मिलती है। 'खादी' और 'चरखा' पर लिखी अनेक कविताएं देशवासियों में राष्ट्रीय एकता और देशभावना का संचार करती हैं। ऐसे अनेक प्रतिबन्धित राष्ट्रीय गीत हैं जिनमें स्वदेश का गौरवगान है तथा राष्ट्रीय ध्वज और मातृभूमि की स्तुतियां गाई गई हैं। उन गीतों और कविताओं को भी तिबंधित होना पड़ा जिनमें भारतवर्ष के स्वर्णिम अतीत और प्राचीन सांस्कृतिक उपलब्धियों का जिक्र है। भारतीय ऐतिहासिक और पौराणिक चरित्रों के गुणगान करनेवाले गीत भी प्रतिबन्धित किए गए हैं। अधिकांश प्रतिबन्धित कविताओं, गीत, ग़ज़लों और लोकगीतों में अंग्रेजीराज के दमनमूलक कार्रवाइयों का मार्मिक वर्णन किया गया है। यहां कुछेक कविताओं की बानगी देखी जा सकती है। कवि

बलभद्र प्रसाद रसिक ' ने क्रान्ति के महत्व को उजागर करते हुए लिखा है कि *"क्रान्ति है एक शक्ति अनमोल बड़े - बड़े साम्राज्यों को यह करती डांवाडोल"।* कवि यह देखता है कि अंग्रेजीराज में आम जनता का जीवन दूभर हो चला है , इसलिए वह क्रान्ति के महत्व को समझते हुए उससे सबको आगाह करता है । क्रान्ति के कवि प्रह्लाद पाण्डेय ' शशि ' को अंग्रेजीराज में सर्वत्र हाय ! हाय ! और त्राहि त्राहि की पुकार सुनाई पड़ती है । यही कारण है कि कवि स्वयं को क्रान्तिदूत के रूप में राष्ट्र को समर्पित करते हुए लिखता हैं कि *"हाय हाय !! बस त्राहि त्राहि !! का , मचा हुआ चीत्कार यहां है । रोदनमयी धंसी आंखों में , आंसू का व्यापार यहां है । इस विनाश के महागर्त में प्रकाश लेकर आया हूं , क्रान्तिदूत बनकर आया हूँ"।* देश की विषम परिस्थितियां कवि के अन्तर्मन को निरन्तर मथती हुई बेचैन कर देती हैं और वह अपने भीतर के कवि - स्रष्टा को सम्बोधित करते हुए कह उठता है *"हो उठे ज्वालामुखी - सा तप्त , हिमगिरि का हिमांचल । आग की लपटें बिछा दे , व्योम - जग में इन्दु चंचल ।। उल्लसित तारावली - सा , प्रज्वलित हो क्षीण जीवन"। कवि ! सुनाओ तान ऐसी , आज हो स्वच्छन्द जीवन"।* इन कवियों ने अपनी कविताओं में अपनी रोटियां को भी एक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया है । कवि देश के सर्वहाराओं को सम्बोधित करते हुए कहता है कि *"जाग जाग ओ भूखी - नंगी , उत्पीडित मानव की टोली । क्रोधित व्याकुल विषधर जैसा , बिल से निकल लक्ष्य पर चल दे । सेनानी ललकार रहा है , प्रलयंकर ने आँखें खोली ।। बजा रहा है बीन सपेरा , तरल तरल तू गरल उगल दे"।* दूसरी ओर दमन से जूझते हुए एक अन्य कवि अपनी कविताओं में क्रान्ति का आह्वान करते हुए हुंकार उठता है कि *"चाहे जितना भले दमन हो । मन मिटने के लिए मगन हो । खून शहीदों का रंग लाए , लाशों का सागर लहराए । जग में विजय ध्वजा फहराए , दुश्मन देख - देख धहराए"* । भारतीय क्रान्तिकारी रचनाकार यह अच्छी तरह जानते थे कि अंग्रेजों के रहते भारतवर्ष और उसके देशवासियों का भला कभी नहीं हो सकता । इसलिए कवि भारतवासियों को सावधान करते हुए कहता है कि *"तब्दील गवर्नमेण्ट की रफ्तार न होगी , गर कौम असहयोग पर तैयार न होगी । बन जाएंगे हर शहर में जलियांवाले बाग , इस मुल्क से गर दूर यह सरकार न होगी"।* कवि भारतीय क्रान्तिकारियों से अंग्रेजी सरकार को देश से दूर करके ही दम लेने को कहता है । यदि ऐसा नहीं हुआ तो सारा देश जलियांवाले बाग में बदल जाएगा । अकारण नहीं है कि स्वतन्त्रता का गायक कवि ' चकबस्त ' दृढकण्ठ घोषणा करते हुए कहता है कि *"सुनेंगे कल का न वादा , हम आज के बदले । न लेंगे हरगिज बहिश्त भी , हम स्वराज्य के बदले" ।।* अंग्रेजों के द्वारा बंगाल विभाजन के साथ ही बंग - भंग विरोधी आन्दोलन जोर पकड़ने लगा । फलस्वरूप क्रान्तिकारी गतिविधियां तेज हो गई और समूचे देश में विदेशी सामानों के बहिष्कार तथा

स्वदेशी वस्तुओं के उपभोग पर अधिकाधिक जोर दिया जाने लगा । क्रान्तिकारी और देशप्रेमी कविगण भला इन परिस्थितियों में कैसे चुप रह सकते थे । उन्होंने भी अपनी रचनाओं के माध्यम से विदेशी के बहिष्कार और स्वदेशी के प्रयोग के लिए देश की जनता से आह्वान किया । पं . कन्हैयालाल दीक्षित ने भारतीयों को उद्बोधित करते हुए लिखा है कि *"उठो हिन्दवालों न रहने कसर दो विदेशी का अब तो बहिष्कार कर दो । मयस्सर जहां पेटभर है न दाना ।। गुलामी में मुश्किल हुआ सर उठाना ।। मंगाकर विदेशी वहां धन लुटाना । तुम्हें चाहिए दिल में कुछ शर्म खाना ।। मिटा देश जाता है इसकी खबर लो । विदेशी का अब तो बहिष्कार दो" ।।* आकस्मिक नहीं था कि ये कवि विदेशी का बहिष्कार करने लगे थे , बल्कि उनकी इस समूची रचना - प्रक्रिया में देश की दुर्दशा और राष्ट्रीय स्वाभिमान की चिन्ता निहित थी । ये कविगण देख

रहे थे कि देश की निरीह और असहाय जनता न केवल विदेशी निरंकुश शासन के द्वारा सताई जा रही है , बल्कि अंग्रेज उसकी सारी सम्पदा लूटकर लन्दन की तिजोरी भरने में लगे हैं। दूसरी ओर कवि अभिराम शर्मा ने भारतीय नौजवानों को भी निष्क्रियता और उदासीनता को त्यागने तथा स्वदेश की चिन्ता करने के लिए प्रेरित किया है "जवानो ! उठो उठो तत्काल न झुकने देना भारतभाल। देश में इतनी है हलचल , पहनते फिर भी तुम मलमल ।। कहां इतना अमूल्य पल - पल , कहाँ तुम खोद रहे दलदल। पहिनना मत परदेसी माल , न झुकने देना भारत भाल" ।। इस कविता में कवि ने निश्चय ही भारतीयता की भावना तथा राष्ट्र की महनीयता को उजागर करते हुए नौजवानों का राष्ट्रहित के लिए आह्वान किया है। उसने देश की दुरवस्था के कारणों की तलाश करते हुए विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार की बात कही है । स्वदेशी के प्रयोग और विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का आन्दोलन गांधीजी के राजनीतिक परिदृश्य पर आने के साथ ही तीव्रतर हो गया था । कवि त्रिभुवननाथ ने अपने चरखा गीत में लिखा है कि *"इन गोरों को लन्दन भगाएगा चरखा विदेशी चलन को मिटाएगा चरखा"* । वैमनस्य फैलानेवाली करतूतों के मद्देनजर कवि ने लिखा है कि *"वतन की गुलामी छोड़ाएगा खद्दर , गरीबों की इज्जत बचाएगा खद्दर । हिन्दू है ताना मुसलमान बाना , बिनाबट में दोनों को लाएगा खद्दर"* । स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान चर्चित कवि सोहनलाल द्विवेदी ने लिखा है कि *"खादी में कितने दलितों के दग्ध हृदय की दाह छिपी । कितनों की कसक कराह छिपी , कितनों की आहत आह छिपी । खादी में कितने ही नंगों - भिखमगों की है आस छिपी । कितनों की इसमें भूख छिपी , कितनों की इसमें प्यास छिपी"* । यहां कवि खादी के भीतर तत्कालीन पराधीन भारतीय समाज की जनभावनाओं की मार्मिक अभिव्यक्ति एवं सदियों से पीड़ित मानवता की घनीभूत पीड़ा का दर्शन करता है। जहां एक ओर प्रथम विश्वयुद्ध के बाद अंग्रेजी सरकार अपने वायदे से मुकरने लगी , तो दूसरी ओर रूसी क्रान्ति के फलस्वरूप भारतीय जनता अपने अधिकारों के प्रति सजग होने लगी। गांधीजी ने जब सत्याग्रह और असहयोग आन्दोलन शुरू किया तो अंग्रेजी सरकार बौखला उठी । उसने भारतीय सत्याग्रहियों को जेल भेजना शुरू कर दिया और आम आदगी को तरह - तरह के हथकण्डे अपनाकर पीड़ित - प्रताड़ित करने लगी। ऐसे ही समय पं . माधव शुक्ल ने राष्ट्र के शूर - वीरों को ललकारते हुए लिखा कि *"निकल पड़े मैदान - ए - जंग में गर कोई अभिमानी है । आज देखना है किसमें कितना दम कितना पानी है"* ।। अपनी दूसरी कविता में शुक्लजी ने स्वराज्य के लिए देश के बच्चे - बच्चे से अंग्रेजीराज के फरमानों को भंग करने का आह्वान किया है *"निकल पडो अब बनकर सैनिक भंग करो फरमानों को । बिन स्वराज्य के नहीं हटेंगे , कोल रहे मरदानों का"* ।। सुभद्राकुमारी चौहान की कविता ' *"बुन्देले हर बोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी , खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी"* और दूसरी ओर मनोरंजन , एम . ए . की कविता *"मस्ती की थी छिड़ी रागिनी , आजादी का गाना था , सब कहते हैं कुंवरसिंह भी बड़ा वीर मर्दाना था"* इन दोनों कविताओं में कवियों ने झांसी की रानी लक्ष्मीबाई और वीर कुवर सिंह की वीरता का बखान किया है। इसी तरह कवि बलभद्र प्रसाद रसिक ने लोकमान्य तिलक का गुणगान करते हुए लिखा है "लेश भी न क्लेश थे स्वदेश का मिटाते लोग , सबों ने लगाया राजभक्ति में लगन था। तभी भारतीयता का भाव भरने के लिए , लोकमान्य तिलक का हुआ आगमन था" । कवि ने लालाजी के शौर्य एवं उत्सर्ग का महिमा का गान करते हुए लिखा है कि *"स्वयं लाजपत किस प्रकार लज्जा मां की लूटने देता ? आंखों के आगे आंखों के तारों को कुटने देता ? सत्याग्रह का शस्त्र हाथ में लेकर निकल पड़ा रणवीर सहम गए अत्याचारी गण लख कर उसकी छवि गम्भीर"* ।। कवि राजाराम नागर मे अपनी कविता में लिखा है कि- *"छिपा है कहां जाके प्यारा था आलम के आँखों का तारा भगत सिंह। बहुत नाम रोशन किया है जहां में , कि चमका है बनकर सितारा भगतसिंह"* । काकोरी शहीद रामप्रसाद बिस्मिल ने क्रान्तिकारी यतीन्द्रदास की शहादत को इबादत का मर्तबा देते हुए लिखा है कि *"पुरअसर*

है , दर्द में डूबी हुई है किस कदर , दिल अगर है तो सुनो दिल से कहानी दास की ।। फाकामस्ती में भी मस्तों की तरह वह मस्त था । गोया हिम्मत का नमूना थी जवानी दास की" ।। उल्लेखनीय है कि इन प्रतिबन्धित कविताओं और गीतों में बहुत से ऐसे गीत हैं जो राष्ट्रगीत एवं वन्दना के रूप में लिखे गए हैं। मातृभूमि जन्मभूमि और भारतमाता के महत्व और दुःखों का गान करनेवाले गीत भी प्रतिबंधित हुए हैं। यही कारण है कि ' वन्देमातरम् ' और उसके महत्व को उजागर करनेवाले अंग्रेजीराज विरोधी गीतों को प्रतिबन्धित कर लिया गया है। ऐसे गीतों की कुछ पंक्तियां उदाहरण के रूप में देखी जा सकती हैं (क) "छीन सकती है नहीं सरकार बन्देमातम | हम गरीबों के गले का हार बन्देमातरम् । कतिपय प्रतिबन्धित कविताओं में पराधीनता की पीड़ा और स्वाधीनता के महत्व को अंकित किया गया है। स्वामी नारायणानन्द ने परवशता की इस पीड़ा की मार्मिक अभिव्यक्ति इन पंक्तियों में की है "अबस जिन्दगी का गुमा है , भरम है , गुलामी में जीना न मरने से कम है। वे कहते हैं हमसे कि खामोश रहना , सहो चोटें दिल पर जुबां से न कहना ।। रहे पेट खाली रहे तन बरहना , वफादार हो तुम ज़फाओं को सहना । *"इसी पीड़ा की त्रासदी को कवि दिनेश कुमार बाथम ने आभिव्यक्त किया है - "अधीन होकर बुरा है जीना , मरना अच्छा स्वतन्त्र होकर" । सुधा को तज कर गरल का प्याला , है पीना अच्छा स्वतन्त्र होकर" ।।* पराधीन देश का एक साधारण निवासी भी इस पराधीनता की पीड़ा का सहज ही अन्दाजा लगा सकता है। इस पीड़ा की पराकाष्ठा उस समय और अधिक बढ़ जाती है जब उसके साथ दमन और उत्पीडन की कहानी भी जुड़ी हो । हैरत की बात नहीं है कि अधिकांश प्रतिबन्धित कविताओं में अंग्रेजीराज द्वारा भारतवासियों के दमन , उत्पीड़न और आर्थिक शोषण के साथ इसका प्रतिकार भी मिलता है जो हमें आश्वस्त करता है , हमारे बुझे हुए आशा के दीपों को प्रज्वलित करता है तथा अंग्रेजी सरकार के निर्लज्ज कपोलों पर करारा प्रहार करता है। कवि कमल ने बिल्कुल ठीक लिखा है कि *"हमारा हक है हमारी दौलत , किसी के बाबा का जर नहीं है हैं मुल्क भारत वतन हमारा , किसी के खाला का घर नहीं है" ।* मुक्तिकामी कवि जालिम अंग्रेजी सरकार से दो टूक लहजे में कहते हैं *"हम बेकसों का जालिम क्यों खूं बहा रहा है ? है क्या कसूर जिससे ये जुल्म ढा रहा है ? भारत को दासता की चक्की में डालकर के । गर्दन पर निर्दयी क्यों छुरी चला रहा है" ?* लेकिन क्रान्तिकारी कवि और काकोरी शहीद ' बिस्मिल ' को यह पता है कि आततायी के हर जुल्म की इन्तहा है । इसलिए कवि जुल्मी अंग्रेजी सरकार को आगाह करते हुए कहता है कि "भारत न रह सकेगा हरगिज गुलामखाना | आजाद होगा , होगा आता है वह जमाना ।। खूं खौलने लगा है हिन्दुस्तानियों का । कर देंगे जालिमों का हम बन्द जुल्म ढाना" ।। यही कारण है कि कवि (वियोगी) भी साम्राज्यवादी अंग्रेजी सरकार के अन्त की घोषणा करते हुए कहता है कि अब तुम्हारे दिन लद गए है- *"तू खंजर जुल्म का जालिम चला ले और थोड़े दिन । गरीबों बेगुनाहों को सता ले और थोड़े दिन" ।।* बहुत - सी प्रतिबन्धित कविताओं में अंग्रेजीराज द्वारा भारतीय अर्थव्यवस्था के शोषण का सुन्दर चित्रांकन किया गया है। इन कविताओं से यह पता चलता है । कि किस प्रकार अंग्रेजी सरकार ने भारतीय कुटीर उद्योग - धन्धों और अर्थव्यवस्था को क्रूरतापूर्वक छिन्न - भिन्न कर डाला था। आकस्मिक नहीं है कि कवि मिट्टन लाल ने ' ब्रिटिश राज की कहानी ' नामक अपनी आल्हा - कविताओं में अंग्रेजी राज द्वारा भारतीय अर्थव्यवस्था की तबाही का जीवन्त चित्रण किया है *"कला कौशल उन नष्ट कराए , सबको मुफलिस दियो बनाय हीरा , मोती , सोना , चांदी , पहुंचे सात समन्दर पार नौ पाई हर मनुष्य की आमद , पैत्रिक धन सब दियो गंवाय । जेवर भूषण नष्ट भए सब , भारत हाय - हाय चिल्लाय । भारत का ले लिया बनिज सब , भारत*

की प्रभुता को पाय । जुल्म देखकर परजा बहुत रही घबड़ाय" । अंग्रेजों के इसी शोषण को मद्देनज़र रखते हुए कवि अभिराम शर्मा ने लिखा है *" भाई जब हुए कसाई , तब गैरों की बन आई । दीनता देश में छाई , पूंजी हो गई सफाई / मत अपना घर लुटवाओ ! अन्यायी राज मिटाओ" !* अंग्रेजीराज के इस लूटमार की कहानी और आम , भारतवासियों की जिन्दगी की विरानियों को भी लोक कवियों ने भी दर्दभरी आवाज दी है । कवि पं . रामकुमार उपाध्याय ' वैद्य ' ने इसी दर्द को अपनी भोजपुरी कविता में भरने का प्रयास किया है *"लगली बाजार हो पहरुवै बिना लूट गइलिन । अन्न धन सोनवां विदेसी भइया लूट लेंगें । दाना बिन होइ गइले देसवा भिखार हो । पहरुवै बिना लूट गइलिन "।* कवि रामकुमार वैद्य ने किसानों की दुर्दशा का सटीक चित्र खींचा है *"सबसे किसान हो अभागा हमरे देसवा में । इनही जोताई करे इनही बोआई करे । तबहू बेचारा रोज मरेले भुखान हो" //* अभागा । दिन भर बेगारी रहे लाखन ठे गारी सहै । तबहू न लागे इन्हें खाए के ठिकान हो । जमींदारों की यातनाओं से किसान तार - तार चुके थे । ऐसे ही एक किसान जो लगान न दे सका है , उसकी दयनीयता और जमींदारों के जुल्म का कवि ने इन शब्दों में चित्रण किया है *"नहि काहू दिना ते बेगार करी नहि दीनी लगान की एको पाई । सरकार ने ताहि बुलाओ अभी , इतनी कहि ठोकर एक जमाई । कर जोरि करी बिनती उनकी बहुभातिन सो दिनतहूं दरसाई । पग धाय गहे तिनके अपने घर की सब हालत रोय सुनाई ।। 1 ।। सुनि दीन भरी बतियां तिहि की अधरा फरकाय के भौहे चढ़ाई । पथरा सो करेजो पसीजो नहि , रिसिआय के पीठ पै बेंत जमाई । चुटिया गहि ऐचि लियो भुइ पै , हानि लात और घूंसा करी मन भाई । धरती पै घसीटत पीटत ताहि , गयो सरकार के द्वारे सिधाई"* जमींदारी प्रथा और जमींदारों के उत्पीड़न से तंग आकर भारतीय किसान अंग्रेजीराज में ही गांवों से शहरों की ओर पलायन करने लगे थे । यही वह समय था जब भारतीय किसानों के धीरे - धीरे मजदूर बनने की प्रक्रिया शुरू होती है । कवि ने किसानों के कृषक से मजदूर के रूप में रूपान्तरण की इस प्रक्रिया को और पूंजीवादी एवं सामन्तवादी शक्तियों द्वारा कृषकों तथा मजदूरों के शोषण - उत्पीड़न को अत्यन्त मर्मस्पर्शिता के साथ रूपायित किया *है "गांव छोड़ शहरों को जाते , मिल में वहीं नौकरी पाते , किन्तु वहां से मासिक लाते , महज रुपल्ली चार । सुन्दर - सुन्दर उन्हें बनाते , वस्त्रों का भण्डार लगाते , अर्ध नग्न फिर भी रह जाते , बच्चे तक सुकुमार । किसानों हो जाओ तैयार" ।* कवि ने किसानों की तरह ही मजदूरों के उत्पीड़न का चित्रण किया है । इसलिए वह न केवल भारत के मजदूरों की बल्कि दुनिया के तमाम गुलाम देश के मजलूमों और बदनसीबों को जाग उठने का आह्वान किया है *"सारे जहां के मजलूमों उठो कि वक्त आया । ऐ पेट गुलामों उठो कि वक्त आया । दुनिया के बदनसीबों उठो कि वक्त आया । सब कुछ उन्हीं का होगा अब तक रहे जो साया"* । प्रतिबन्धित कविताओं में आजादी की लड़ाई के दौरान छात्रों की रचनात्मक भूमिकाओं का भी उल्लेख किया गया है । स्वाधीनता के संघर्ष में छात्रों की युगान्तरकारी भूमिका रही है । सरकार छात्रों की गतिविधियों के प्रति अत्यन्त चिन्तित रहती थीं । इसीलिए कवि ' चकोर ' ने छात्रों को आगाह करते हुए लिखा है कि *"विद्यार्थियों ! तुम्ही हो बस कौमी जिन्दगानी । तुम पर ही मुनहसर है , कौमों वतन का पानी ।। इंगलिश जरूर पढ़ना , उसका न बन के रहना । नहीं तो जान की तुम्हारे दुश्मन बनेगी जानी"* ।। विद्यार्थियों की तरह ही स्वाधीनता आन्दोलन में लेखकों की ऐतिहासिक भूमिका रही है । इस भूमिका की पहचान बहुत कुछ इन प्रतिबन्धित कविताओं से भी प्रकट होता है । निश्चय ही राष्ट्रीय मुक्ति के इस संग्राम को सफल बनाने में लेखकों की क्रान्तिकारी भूमिका रही है । इस क्रान्तिकारी स्वरूप की पहचान कवि ' शायक ' की इन पंक्तियों से भी होती है - *"मचल के पहलू में दिल है कहता कि हम है ' शायक ' स्वतंत्रता के बामुकाबिल , हमारी ये लेखनी रहेगी"* ।

—डॉ.रुस्तम राय
परामर्शी (रा.भा)
प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद

इकाई में अग्निशमन मॉक ड्रिल प्रशिक्षण कार्यक्रम

प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद कार्यालय में भविष्य में होने वाले किसी भी अप्रिय घटना से निपटने के लिए अग्निशमन मॉक ड्रिल का प्रशिक्षण दिया गया। इस कार्यक्रम में कर्मचारियों को आपदा से निपटने के लिए सुरक्षा कर्मियों ने चल अग्निशमन उपकरणों के व्यवहारिक प्रयोग करने की पद्धति से अवगत कराया तथा कर्मचारियों द्वारा मॉक ड्रिल भी कराया गया। इस कार्यक्रम में प्रायः सभी कर्मचारियों ने उत्साह के साथ भाग लिया।

गणतंत्र दिवस समारोह- 2022

दिनांकः 26 जनवरी 2022 को प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद में बड़े ही धूमधाम व हर्षोल्लास के साथ राष्ट्रीय पर्व गणतंत्र दिवस मनाया गया। सर्वप्रथम मुख्य सुरक्षा अधिकारी द्वारा मुख्य महा प्रबंधक महोदय का अभिवादन किया गया। अभिवादन स्वीकार करने के उपरांत श्री श्रीकर प्रधान, मुख्य महाप्रबंधक महोदय ने तिरंगा ध्वजारोण किया। तद्पश्चात मुख्य महाप्रबंधक महोदय ने सुरक्षा कर्मियों के 'गार्ड ऑफ ऑनर' का निरीक्षण किया। इस अवसर पर उन्होंने सभी पदाधिकारियों, कार्मिकों व परिवारजन को गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएँ दीं।

इस अवसर पर सुरक्षा कार्मिकों द्वारा परेड का आयोजन किया गया। इसी शुभ अवसर पर कर्मिकों को उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए मान्यता प्रदान करते हुए सम्मानित किया गया तथा उन्हें नगद पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र भी दिए गए।

गणतंत्र दिवस के सुअवसर पर मुख्य अतिथि द्वारा ध्वजारोण किया गया

मुख्य महाप्रबंधक महोदय का आगमन एवं कर्मचारियों द्वारा सुस्वागतम

मुख्य सुरक्षा अधिकारी द्वारा मुख्य महाप्रबंधक महोदय को "गार्ड ऑफ ऑनर" से सम्मानित किया गया

मुख्य महाप्रबंधक महोदय द्वारा सुरक्षा कर्मियों का निरीक्षण

मुख्य महाप्रबंधक महोदय वं सभी कर्मचारियों द्वारा राष्ट्रीय ध्वज को सलामी

मुख्य महाप्रबंधक महोदय द्वारा कर्मचारियों को संबोधन

श्री वी सुरेश, स. महासचिव, एचएसपीपीईयू द्वारा धन्यवाद ज्ञापन

गणतंत्र दिवस के अवसर पर उपस्थित प्रतिभूति मुद्रणालय परिवार

प्रभावी बातें और व्यक्तित्व विकास

प्राचीन काल की बात है, एक राजा था। उसने एक रात एक स्वप्न देखा कि उसके सारे दाँत टूट गये हैं और मुँह में एक दाँत भी शेष नहीं बचा। राजा ने दरबार के दोनों राज-ज्योतिषों को बुलाया और पूछा कि इस स्वप्न का अर्थ क्या है- शुभ वा अशुभ ? पहले ज्योतिषी ने कहा- "महाराज यह स्वप्न बहुत अशुभ है इसका अर्थ है कि आपके साथी सगे संबंधी एक-एक कर आपके सामने मृत्यु को प्राप्त होंगे यह आपका दुर्भाग्य होगा कि आपको सभी सगे संबंधियों के मरने का दुख भोगना पड़ेगा।" यह सुनकर राजा अत्यन्त क्रोधित हुआ। उसने सेनापति को आदेश दिया कि इस ज्योतिषी के सिर को हाथी के पांव तले कुचलवा दिया जाए। अब दूसरे ज्योतिषी की बारी थी। उसने कहा "महाराजाधिराज सबके पालनहार! आपका यह स्वप्न अति शुभ है। इसका अर्थ है कि आप चिरायु होंगे और लम्बे समय तक राज्यसुख भोगेंगे। आपकी आयु आपके सभी सगे संबंधियों से अधिक होगी। "ऐसा सुनकर राजा अति प्रसन्न हुआ ज्योतिषी को पुरस्कार में एक हाथी दिया। तभी से एक प्रसिद्ध किवदंती चली आ रही है "बातहि हाथी पाइये, बातहि हाथी पाँव" इस दृष्टान्त से एक काम की बात पता चलती है। किसी एक बात को कहने के अनेकानेक तरीके हो सकते हैं तथा तदानुसार भिन्न-भिन्न परिणाम भी। एक कहावत हे 'बनिया गुड़ ना दे, गुड़ जैसी बात तो कह दे।" मधुर भाषा जहाँ दूसरों को शीतलता और खुशी प्रदान करती है, वहीं स्वयं को भी खुशी प्रदान करती है। यह लाख टके की बात है कि आशातीत सफलता पाने के लिये बोलने की कला में कौशल अर्जित करना अत्यावश्यक है। सही कहा गया है कि क्या बने गर बात बनाये न बने।

बहुधा देखा जाता है कि लोग सुबह से शाम तक बतियाते रहते हैं- अर्थहीन अनर्गल बातें। इसमें अधिकतर दूसरों की आलोचना, अपनी डींग या फिजूल की चुहलबाजी होती है। बातूनी और गप्पी लोगों में यह लत मानसिक ग्रन्थियों तक जड़ पकड़े होती है। यह एक आश्चर्यजनक सत्य है कि पिचानवे प्रतिशत लोगों को बात करने का प्रभावपूर्ण सलीका नहीं आता। वे दिन भर गाल बजाते रहते हैं किन्तु नहीं जानते कि किस समय कैसे बात करनी चाहिये।

बात में से बात निकली है तो जरा 'बात' पर विचार किया जाए। किस्म किस्म की बातें होती हैं- अच्छी बात बुरी बात, खरीबात खोटी बात, कड़वी बात, तीखी बात, पत्थर की लकीर सी बात, पागल की तकरीर सी बात, पंचों की नेक बात सौ बातों की एक बात कटे पर नमक सी बात, घाव पर मरहम सी बात। भई वाह बात भी क्या बात है। बात गिराई जाती है बात उठाई जाती है, बात रखी जाती है बात ठुकराई जाती है, बात सिर माथे पर सजाई भी जाती है।

बात में वजन होता है, बात में मनन होता है और बात में विष-वमन भी होता है। कई बार बात आई गई हो जाती है और कई बार बात शीशे की दरार या दिल में फांस हो जाती है। बात पकड़कर बतंगड़ बनायी जाती है और कभी इस कान से सुन उस कान से निकाल दी जाती है। कमान से निकले तीर की तरह बात भी वापस नहीं आती फिर पछताने से कोई लाभ नहीं। बात ठीक से ना की जाये तो बनने की जगह बात बिगड़ जाती है। अतः सदा ध्यान रखें-

बोली एक अमोल है जो कोई बोले जानि ।
हिये तराजू तोल के तब मुख बाहर आनि ।।

अधिकतर व्यक्ति सुख-सम्पन्नता एवं यश-समृद्धि के लिये प्रयासरत रहते हैं। लेकिन उनकी अर्जित सफलता

उनके द्वारा किये गये प्रयासों की तुलना में बहुत कम रहती है। यदि वे इस बात की तह में जायें तो इसका कारण उन्हें अपनी बात करने के ढंग में कमी के रूप में मिलेगा नीचे इस प्रकार की कुछ कमियाँ दी गई हैं–

ऐन मौके पर अपने मन में आई बात न कह पाना या ठीक से न रख पाना और बाद में पछताना।

* आत्मविश्वास में कमी या हीनता की भावना अनुभव करना।
* अतिविश्वासी होना या श्रेष्ठता की भावना से ग्रस्त होना।
* मुख्य विषय से विचलित होकर व्यर्थ की बात में समय गंवाना।
* अपने प्रारब्ध/भाग्य जीवन की कुछ बुरी परिस्थितियों को दोष देते हुए अपनी महत्वाकांक्षाओं और स्वप्नों का सदा के लिये गला घोंट देना।
* अपने जीवन स्तर में सुधार के प्रति निपट निराश हो जाना।
* घर बाहर या कार्यस्थल पर साथियों या सम्बन्धियों से मधुर संबंध न बना पाना।
* सही समय सही निर्णय न ले सकने के कारण शशोपंज मे रहना।
* सकारात्मक सोच की कमी अर्थात् मन में बुरे विचार अधिक आते रहना।
* आस-पास के लोगों को सफलता की उड़ान भरते देख यह मान कर बैठ जाना कि यह आपके बस की बात नहीं अन्य में यह क्षमता प्रभु-प्रदत्त है।
* सबके बीच अपने को उपेक्षित अनुभव कर अलग-थलग हो जाना।

मानव की सफलता एवं उसकी कुशलता परस्पर समानुपाती है। अधिकतर लोग इसलिये सफल नहीं हो पाते क्योंकि उनमें वाक चातुर्य नहीं होता या फिर क्योंकि सफल नहीं हुए इसलिये वाक चातुर्य नहीं हुआ। संपूर्ण विश्व में, विशेषकर भारत में अनगिनत महागुरु, योगी, आचार्य, महर्षि, दिव्यमातायें, दिव्य साधु-साध्वी हैं। जिनमें गजब की सम्मोहक वक् तृत्व शक्ति है। इसी आधार पर संभवतः उन्हे भगवान का दर्जा तक दे दिया गया है। बड़ी-बड़ी हस्तियाँ उनके जो सौ रुपये जैसी राशि अपने परिवार जनों पर व्यय करने में आनाकानी करते है वे ईश्वर के चरणों में अपना सर्वस्व न्यौछावर करने को तत्पर रहते हैं। महाकजूंस जो सौ रूपये जैसी राशि अपने परिवार जनों पर व्यय करने में आनाकानी करते हैं, वे इन स्वयंभुओं पर लाखों वार देते हैं। उपरोक्त विभूतियों मे बात करने की विलक्षण प्रतिभा मिलेगी जो उन्हें पूज्य एवं परम बना देती है। उनकी बातों में ओज है, असर है, तेज है, तर्क है, हावभाव एवं नाटकीयता है आरोह- अवरोह एवं संप्रषेणीयता है, सटीक दृष्टान्त और सम्मोहन है शेष कुछ और न भी हो, परन्तु मनोरंजन है।

कुछ क्षेत्रों में तो वाक पटु होना अपरिहार्य है जैसे क्रय - विक्रय शिक्षण, मानव संसाधन विकास, एजेंट, जन - संपर्क सेवायें आदि। कुछ सफल लोगों के लिये कहा जाता है फलाँ-फलाँ तो बातों की खाता है। व्यक्तित्व विकास एव जीवन में सफलता के उच्च आयाम प्रप्ति के लिये, अपनी बात ठीक से रखने में कुशल होना अत्यावश्यक है।

इसके लिये नीचे बड़े काम की कुछ बातें दी गयी हैं-

* सर्वप्रथम एक अच्छे श्रोता बने और दूसरे की बात धैर्य से सुने।
* आप जिससे भी बात करे उसे लगे आप उसके शुभचिन्तक हैं।
* दूसरों की आँखों में देखते हुए बात करें यह आपके आत्मविश्वास का द्योतक है।
* न कम और न अधिक अर्थात् उचित फासले पर रह कर बाते करें।
* भाषा सरल सहज एवं सटीक हो (कृत्रिमता से दूर रहे)।
* बात करते समय अंग संचालन (बॉडी लैंग्वेज) सहज एवं प्रभावपूर्ण हो जो विषय से तालमेल रखते हुए

अतिरिक्त प्रभाव डाले।

* न अधिक जोर से और न अधिक धीमे-धीमे बोले।
* न अधिक जल्दी जल्दी और अधिक रुक-रुक कर बोलें।
* बोलते समय कुछ भद्दी आदतों(एक्सन) से परहेज करें।

जैसे होठ चबाना, कान-नाक कुरेदना, खुजाना, अपने वस्त्रों को बार-बार व्यवस्थित करना इधर-उधर ध्यान बंटना, जेब में हाथ डालकर बातें करना आदि।

* बात करते समय सहज मुस्कान या मुस्कराहट का भाव हो।
* सुनिश्चित करें कि जो कुछ आप कह रहे है ठीक वही विषय वस्तु या संदेश श्रोता तक पहुँच (समक्ष) रहा है।

भीड़ से कुछ अलग दिखना है, कुछ नवीन एव श्रेष्ठतम प्राप्त करना है, समय की पर्तों के नीचे दबी अपनी भूली-बिसरी खूबी को भरना है एवं यदि अपने भीतर छिपी ऊर्जा एवं कार्य क्षमता को पहचानना है तो उपरोक्त काम की बातों को अपनायें एवं अपने व्यक्तित्व को निखारें।

प्रस्तुति-श्री श्रीकर प्रधान
मुख्य महाप्रबंधक

जी वरलक्ष्मी
वरि. कार्यालय सहायक(मा. सं.)

योग एक साधन

2014 में भारत के प्रधानमंत्री मोदी ने संयुक्त राष्ट्र को 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाने का सुझाव दिया था क्योंकि गर्मियों में सूर्य उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित होता है एवं उत्तरी गोलार्द्ध में 21 जून वर्ष का सबसे लंबा दिन होता है। सर्वप्रथम अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन 21 जून, 2015 को किया गया था जिसने विश्व भर में कई कीर्तिमान स्थापित किये। वर्तमान में योग भारत ही नहीं पूरे विश्व के लिये प्रासांगिक विषय बना हुआ है। भारत के अलावा कई इस्लामिक देशों ने भी इसे अपनाया है। प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी 21 जून को शारीरिक तथा मानसिक दोनों तरह से कल्याण जो कि इस साल का थीम सामंजस्य एंव शांति के लिए योग(#yoga for wellness) के साथ अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। चूँकि कोविड परिस्थितियों के कारण सामूहिक गतिविधियों पर प्रतिबंध को देखते हुए इस वर्ष घर से योग की सलाह दी गई। योग के महत्त्व को देखते हुए आज पूरा विश्व इसे पूरे मनोयोग से अपना रहा है। इन कोविड परिस्थिति में भी लगभग 180 देशों में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। यह हमारी विडम्बना है कि पूर्वजों द्वारा प्रदान की गई इतने समृद्ध विरासत को हमारे ही देश में कहीं-कहीं विरोधाभास झेलना पड़ रहा है। इस नेक कर्म को भी राजनीति तथा धर्म का जामा पहना दिया गया है।

हम सभी जानते है कि इस संकट घड़ी में खासकर दुनियाँ कोविड महामारी से जूझ रही है, अपने जीवन में स्वास्थ्य और कल्याण को बनाये रखना चुनौतीपूर्ण सा प्रतीत हो रहा है। इस महामारी ने प्रत्यक्ष रुप से हमारे दैहिक स्वास्थ्य के साथ-साथ अप्रत्यक्ष रूप से मानसिक स्वास्थ्य पर भी गहरा अघात पहुचायाँ है। प्रत्यक्ष बीमारी का इलाज तो संभव है

जिस तरह बीजारोपण से पूर्व खेत को जोतकर मिट्टी को मुलायम बनाकर उसे बीज बोने के अनुकूल बनाते हैं, उसी तरह आसन और प्राणायाम से शरीर योग के अनुकूल बनता है और तब साधन-अभ्यास में सफलता मिलती है।

क्योंकि इसमें लाक्षणिक गुणों का समावेश होता है। किन्तु इसके विपरीत अप्रत्यक्ष बीमारी लोगों की मनः स्थिति पर गहरा प्रभाव डालता है । घरों में बंद जीवन, वित्तीय संकट की आशंका, समान्य जीवन नहीं जी पाने की छटपटाहट और इन सबसे ऊपर कोरोना का डर, इन सभी भावनाओं ने नकारात्मकता को उत्पन्न कर दिया है। हमें अपने जीवन में भय, तनाव और उत्तेजना का सामना करना पड़ रहा है। इन परिस्थितियों में योग एक सर्वोत्तम विकल्प है। सही मायने में योग का किसी भी धर्म से कोई लेना-देना नहीं है। वैदिक काल से ऋषियों, मुनियों द्वारा प्रदान की गई धरोहर को गहराई से समझने की कोशिश करते है।

'योग' शब्द 'युज समाधौ', 'युज संयमने' अथवा 'युजिर् योगे' धातु में 'घञ्' प्रत्यय लगाने से निष्पन्न होता है, जिसका अर्थ क्रमशः समाधि लगाना, संयम करना तथा योग करना है। 'योग' शब्द का एक अर्थ जोड़ या मिलाप भी होता है।

इस तरह योग की उपर्युक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट हो जाता है कि योग का वास्तविक अर्थ है- आत्मा और परमात्मा का सम्बन्ध होना। कोई भी सच्चा सम्बन्ध सजातीय तत्त्व में ही हो सकता है, विजातीय से नहीं। ईश्वर एक चेतन सत्ता है और आत्मा भी चेतन होने से सजातीय है। अतः

आत्मा के द्वारा ही ईश्वर का साक्षात्कार सम्भव है, अन्य प्राकृतिक साधनों या अलंकरणों से नहीं। क्योंकि ये सारे प्राकृतिक कारण जड़-तत्त्व हैं- चेतन नहीं।

इस योग-साधन के तीन प्रमुख मार्ग हैं-

पिपिल मार्ग: पिपिल हम पिपिलिका यानी चींटी को कहते हैं। जिस तरह चींटी की गति प्रकृति के आधार पर ही होती है, उसकी सारी क्रियाएँ उसके आधार के बिना नहीं हो सकती, उसी तरह 'पिपिल मार्ग' के द्वारा जो योग-साधन करते हैं उनका भी आधार यह प्रकृतिजन्य शरीर ही होता है।

इस प्रकृतिजन्य शरीर के आधार पर शरीर की इन्द्रियों के माध्यम से ही उनके साधन चलते हैं। इसे हम प्राकृतिक साधन भी कह सकते हैं। प्रकृति का आधार लेकर होने वाले साधनों से प्राकृतिक उपलब्धि ही हो सकती है, ईश्वर की प्राप्ति नहीं। इस तरह पिपिल मार्ग वह मार्ग है जिसके द्वारा योग-साधन प्रकृति से निर्मित अवयवों के आधार पर किया जाता है, आत्मा की चेतन सत्ता के द्वारा नहीं। इसे हम योग और शरीर के धरातल के रूप में शारीरिक योग भी कह सकते हैं। समस्त आसन-प्राणायाम, षट् क्रियाएँ आदि इसी पिपिल योग के अन्तर्गत आती हैं।

कपिल मार्ग: इसी तरह 'कपिल' का अर्थ बन्दर होता है। 'कपिल' जिस तरह एक आधार से दूसरे आधार पर गमन करते रहते हैं, उसी तरह कपिल मार्ग का साधन भी मन के द्वारा प्रकृति के आधार पर ही रहता है मगर एक से दूसरे और दूसरे से तीसरे आधारों का सहारा लेकर साधक आगे का अभ्यास करता है। इसमें थोड़ी गतिशीलता है मगर निराधार गमन करने की प्रवृत्ति नहीं है। हमारा मन भी बन्दर की तरह ही चंचल है, इसलिए 'कपिल योग' में इस चंचल मन को शान्त करने का अभ्यास कराया जाता है। इस तरह मन के धरातल पर किये गये साधन 'कपिल मार्ग' की श्रेणी में आते हैं।

विहंगम मार्ग: तीसरा मार्ग विहंगम मार्ग है। विहंगम का अर्थ पक्षी से है। यानी जिस तरह पक्षी पृथ्वी के आधार को छोड़कर निराधार गमन करता है, उसी तरह इस मार्ग का साधक प्रकृति को छोड़कर आत्मा के शुद्ध स्वरूप से सद्गुरु के साधन-भेद द्वारा परमात्मा के आधार पर स्थित हो जाता है।

यहाँ शरीर वृक्ष का और आत्मा की चेतना पक्षी का प्रतीक है। प्रभु प्रकृतिपार है, इसलिए उसके पाने का मार्ग भी प्रकृति से परे है। अतएव शुद्ध आत्मिक चेतना के आधार पर जो योग-साधन होता है, वही 'विहंगम योग' है।

आपने गौर किया होगा पिपिल तथा कपिल मार्ग के माध्यम से इस कोविड रूपी अन्धकार से बाहर निकल सकते है। पिपिल मार्ग आधार युक्त है और यह प्रकृति तथा सम्पूर्ण जीवों से संबंधित है , वही कपिल मार्ग मनः स्थिति का साधन है इस मार्ग का अनुसरण कर मानसिक स्थिति सुधारा जा सकता है। अपने व्यस्तम् दैनिक जीवन से आधा घन्टा अपने स्वास्थ्य पर व्यतित कर रोग रहित दिर्घायु जिन्दगी व्यतीत कर सकते है।

जिस तरह बीजारोपण से पूर्व खेत को जोतकर मिट्टी को मुलायम बनाकर उसे बीज बोने के अनुकूल बनाते हैं, उसी तरह आसन और प्राणायाम से शरीर योग के अनुकूल बनता है और तब साधन-अभ्यास में सफलता मिलती है। योग द्वारा शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक शक्तियों के विकास के साथ-साथ आत्मिक शक्ति का विकास भी होता है, और

यही वांछनीय भी है।

निःसंदेह पिपिल तथा कपिल मार्गों का ईश्वर से

कोई संबंध नहीं है और यदि ईश्वर से संबंध नहीं तो विशेष धर्म का सवाल ही नहीं उठता। इनकी उत्पत्ति एक विशेष धर्म में होने के कारण इसका नामाकरण उस विशेष धर्मानुसार हो गया है।

ओशो के अनुसार "योग को धर्म, आस्था और अंधविश्वास के दायरे में बाधना गलत है। योग विज्ञान है, जो जीवन जीने की कला है। साथ ही यह पूर्ण चिकित्सा पद्धति है। जहाँ धर्म हमें खूंटे से बाँधता है, वहीं योग सभी तरह के बंधनों से मुक्ति का मार्ग है।"

योग के इसी महत्त्व को देखते हुए अंतर्राष्ट्रीय समुदाय द्वारा योग की बढ़ती स्वीकारोक्ति एवं पश्चात् को देखते हुए कहा जा सकता है कि इस तरह की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत लोगों तथा समाजों एवं संस्कृतियों के मध्य सांस्कृतिक एवं सभ्यतागत वार्ता बनाए रखने में मदद करती है और इस स्वीकृति से पूरे विश्व को लाभ पहुँचता है।

अमरजीत राय
सहायक प्रबंधक(राभा)

कार्यालय प्रांगण में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन

प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद के कार्यालय प्रांगण में 21 जून, 2021 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया गया। महाप्रबंधक महोदय ने कोरोना महामारी के इस दौर में स्वस्थ जीवन जीने के लिए योग की महत्ता से अवगत कराया तथा दैनिक दिनचर्या में आवश्यक रूप से शामिल करने की सलाह दी। इस शुअवसर पर योग प्रशिक्षिका ने इकाई के सभी कर्मचारियों को योग के विभिन्न आसनों का अभ्यास कराया तथा दैनिक जीवन में उसकी लाभप्रदता के बारे में जानकारी दी।

योग दिवस पर कार्यालय प्रांगण में योगाभ्यास करते हुए कर्ममचारी गण

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदया द्वारा इकाई का निरीक्षण

28 सितम्बर , 2021 को माननीय श्रीमती तृप्ति पी घोष, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदया द्वारा इकाई का निरीक्षण किया गया। सर्वप्रथम श्री श्रीकर प्रधान, मुख्य महाप्रबंधक महोदय ने उनका हार्दिक स्वागत किया। तदपश्चात महोदया जी ने इकाई के विभिन्न अनुभागों का दौरा किया और प्रतिभूति उत्पादकों के बारे में विशेष जानकारी प्राप्त की। साथ ही अत्याधुनिक तकनीक से युक्त कागज जांच प्रयोगशाला का निरीक्षण किया एवं विभिन्न उपकरणों के विषय में जानकारी प्राप्त की।

मुख्य महाप्रबंधक द्वारा अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदया का स्वागत

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदया द्वारा कार्यालय परिसर का अवलोकन

भारतीय डाक विभाग के उत्पादकों का अवलोकन करते हुए।

उपकरणों का निरीक्षण एवं अवलोकन

प्रतिभूति मुद्रणालय परिवार के संग अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदया

उद्घाटन कार्यक्रम

प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद में दिनांकः 03 अगस्त 2021 को प्रतिमुद्रा अतिथि गृह, सी.सी.टी.वी. आदेश नियंत्रण केन्द्र और केफेटेरिया का उद्घाटन निगम कार्यलय से मुख्य अतिथि के रूप में पधारे माननीय श्री एस. के. सिन्हा निदेशक(मा.सं.) के कर-कमलों द्वारा किया गया। सर्वप्रथम श्री बोलेवर बाबु, मुख्य महाप्रबंधक महोदय ने हर्षोल्लास के साथ स्वागत किया।

प्रतिमुद्रा अतिथि गृह आधुनिक सुख-सुविधाओं से सुशोभित है। इकाई में आये हुए अतिथियों को अस्थाई आवास की सुविधा प्रदान हेतु इसका निर्माण किया गया है। सी.सी.टी.वी. आदेश नियंत्रण केन्द्र इकाई के आन्तरिक सुरक्षा को और अधिक सुनिश्चित करेगा। इसमें विकसित तकनीक इकाई को 24X7 अचूक सुरक्षा प्रदान करेगा। इकाई की सुरक्षा के क्षेत्र में यह मील का पत्थर साबित होगा।

केफेटेरिया इकाई के कार्यरत कर्मचारियों को जल-पान और मनोरंजन हेतु बनाया गया है। यह कर्मचारियों को तनाव मुक्त उचित वातावरण प्रदान करेगा।

मुख्य अतिथि का आगमन

मुख्य महाप्रबंधक द्वारा स्वागत

प्रतिमुद्रा अतिथि गृह का उद्घाटन

सी.सी.टी.वी. आदेश नियंत्रण केन्द्र का उद्घाटन

केफेटेरिया का उद्घाटन

मुख्य अतिथि द्वारा इकाई के उपकरण का निरीक्षण

मुख्य अतिथि द्वारा कल्याण केन्द्र का दौरा

मुख्य अतिथि संग प्रतिभूति मुद्रणालय परिवार के सदस्य

राजभाषा नीति संबंधी प्रमुख निदेश

1. **राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत** संकल्प, सामान्य आदेश, नियम अधिसूचनाएं, प्रशासनिक व अन्य रिपोर्टें, प्रेस विज्ञप्तियां, संसद के किसी सदन या दोनों सदनों के समक्ष रखी जाने वाली प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्टें व सरकारी कागजात, संविदा, करार, अनुज्ञप्तियां, अनुज्ञापत्र, निविदा सूचनाएं और निविदा प्रपत्र द्विभाषिक रूप में (अंग्रेजी और हिन्दी) जारी किए जाए। **राजभाषा नियम, 1976 के नियम 6 के अंतर्गत** ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्ति का दायित्व यह सुनिश्चित करना होगा कि ऐसे दस्तावेज हिंदी और अंग्रेजी, दोनों भाषाओं में तैयार, निष्पादित अथवा जारी किए जाएं।

2. **राजभाषा नियम, 1976 के नियम 5** के अनुसार केंद्र सरकार के कार्यालयों से हिंदी में प्राप्त पत्रादि का उत्तर हिंदी में ही दिया जाना है।

3. **राजभाषा नियम, 1976 के नियम 11 के अनुसार** सभी मैनुअल, संहिताएं और असांविधिक प्रक्रिया साहित्य, रजिस्टरों के प्रारूप और शीर्षक, नामपट्ट, साइन बोर्ड, पत्र शीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा लेखन सामग्री की अन्य मदें भी हिंदी और अंग्रेजी में होगी। तद्नुसार, केंद्र सरकार के कार्यालयों से अपेक्षा है कि वे सभी मैनुअल संहिताओं एवं प्रक्रिया संबंधी असांविधिक साहित्य से संबंधित अन्य प्रक्रियात्मक साहित्य अनुवाद के लिए केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो में भेजें।

4. **राजभाषा नियम, 1976 के नियम 12** के अनुसार केंद्र सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व है कि वह यह सुनिश्चित करे कि राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नियम के प्रावधानों तथा इनके अधीन जारी किए गए निदेशों का समुचित रूप से अनुपालन हो तथा इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त एंव प्रभावकारी जांच बिंदु बनाएं जाएं।

5. **राजभाषा नियम, 1976 के नियम 10(4)** के अंतर्गत अधिसूचित बैंकों की शाखाओं में निम्नलिखित कार्य हिंदी में किए जाए:-

   भुगतान आदेश, विजीटिंग कार्ड, सभी प्रकार की सूचियां, विवरणियां, दैनिक बही, मस्टर रोल, प्रेषण बही, लॉग बुक में प्रविष्टियां, प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र, सुरक्षा सेवा संबंधी कार्य, लिफाफा पर पते लिखना, कर्मचारियों के यात्रा भत्ते, अवकाश, भविष्य निधि, आवास निर्माण अग्रिम, कर्मचारियों के लिए चिकित्सा सुविधाओं संबंधी कार्य, बैठकों की कार्यसूची, कार्यवृत्त आदि।

***

राजभाषा अनुभाग

प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद

रामधारी सिंह "दिनकर"

परिचय

हिन्दी के अप्रतिम कवि

जन्म : 23 सितम्बर 1908 , सिमरिया, बेगूसराय, बिहार, भारत

भाषा : हिन्दी

विधाएँ : कविता, आलोचना, निबंध, इतिहास, डायरी, संस्मरण

मुख्य कृतियाँ

कविता संग्रह: रश्मिरथी, उर्वशी, हुंकार, करूक्षेत्र, परशुराम की प्रतीक्षा, हाहाकार

आलोचना: मिट्टी की ओर, काव्य की भूमिका, पंत, शुद्ध कविता की खोज

इतिहास : स्सकृति के चार अध्याय

सम्मान

साहित्य अकादमी परूस्कार, पद्मविभूषण, भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार

निधन

24 अप्रेल, 1974, चेन्नई(तमिलनाडु)

रोटी और स्वाधीनता

आजादी तो मिल गई, मगर, यह गौरव कहाँ जुगाएगा ?
मरभुखे ! इसे घबराहट में तू बेच न तो खा जाएगा ?
आजादी रोटी नहीं, मगर, दोनों में कोई वैर नहीं,
पर कहीं भूख बेताब हुई तो आजादी की खैर नहीं।

हो रहे खड़े आजादी को हर ओर दगा देनेवाले,
पशुओं को रोटी दिखा उन्हें फिर साथ लगा लेनेवाले।
इनके जादू का जोर भला कब तक बुभुक्षु सह सकता है ?
है कौन, पेट की ज्वाला में पड़कर मनुष्य रह सकता है ?

झेलेगा यह बलिदान ? भूख की घनी चोट सह पाएगा ?
आ पड़ी विपद तो क्या प्रताप-सा घास चबा रह पाएगा ?
है बड़ी बात आजादी का पाना ही नहीं, जुगाना भी,
बलि एक बार ही नहीं, उसे पड़ता फिर-फिर दुहराना भी।

प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद में "हिंदी पखवाड़ा" का आयोजन
दिनांक 01 सितम्बर, 2021 से 14 सितम्बर, 2021 तक

हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को गति प्रदान करने के लिए प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद में हिन्दी पखवाड़ा (01सितम्बर, 2021 से 14 सितम्बर, 2021 तक) समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता आदरणीय श्री श्रीकर प्रधान, मुख्य महाप्रबंधक एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा की गई। सर्वप्रथम श्री रुस्तम राय,परामर्शदाता राजभाषा ने अध्यक्ष महोदय तथा अन्य उपस्थित समस्त कार्यपालकों एवं कर्मचारियों तथा यूनियन के पदाधिकारियों का अभिनंदन किया तथा सरस्वती वंदना के साथ कार्यक्रम आरंभ की गई। प्रबंधक (मा.सं)महोदय ने हिंदी भाषा को भारत की जनता एवं राष्ट्र के विकास के लिए आवश्यक बताया तथा संवैधानिक एवं नैतिक जिम्मेदारी के तहत वर्ष भर हिंदी में कार्य करने का अनुरोध किया। तत्पश्चात उन्होंने हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य पर जारी माननीय गृह मंत्री एवं एसपीएमसीआईएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदया के संदेश से सभी को अवगत कराया। इस अवसर पर मुख्य महाप्रबंधक महोदय ने प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद में राजभाषा हिंदी के प्रगति की भूरी-भूरी प्रसंशा की तथा राजभाषा संबंधी संवैधानिक जिम्मेदारी के प्रति

प्रतिबद्धता के निर्वाहन करने पर बल दिया तथा ज्यादा से ज्यादा कार्य राजभाषा हिंदी में करने पर बल दिया। उन्होंने बताया कि हिंदी हमारे स्वाभिमान का प्रतीक है और भिन्न-भिन्न प्रांत के लोगों के मध्य संवाद स्थापित करने में

महत्तवपूर्ण भूमिका निभाती है।

इस विशिष्ट अवसर पर ईकाई के समस्त कार्यपालकों, पर्यवेक्षकों एवं कर्मचारियों के लिए अनेक हिंदी प्रतियोगिताएं जैसे- **हिंदी निबंध, हिंदी में टिप्पण व प्रारूप लेखन, हिंदी टंकण, हिंदी तत्काल भाषण, हिंदी कविता पाठ/ हिंदी में गायन, हिंदी श्रुतिलेख** एवं **हिन्दी प्रश्नमंच** का आयोजित की गई जिसमें सभी आधिकारियों तथा कर्मचारियों ने हर्षोल्लास के साथ भाग लिया।

मुख्य महाप्रबंधक महोदय ने हिंदी पखवाड़ा-2021 के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार के साथ प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया।

हिन्दी निबंध प्रतियोगिता

इस निबंध प्रतियोगिता में कार्यक्रम में कुल 21 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कुल 4 विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

हिन्दी टिप्पणी एवं प्रारूप प्रतियोगिता

इस प्रतियोगिता कार्यक्रम में कुल 25 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस में भी कुल 4 प्रतिभागियों को पुरसकृत किया गया।

हिन्दी टंकण प्रतियोगिता

इस प्रतियोगिता में इस कार्यालय के कुल 11 कार्मिकों ने भाग लिया। इनमें से 4 प्रतिभागी विजेता रहे तथा इन्हे भी पुरस्कृत किया गया।

हिन्दी में तत्काल भाषण प्रतियोगिता

इस प्रतियोगिता में कुल 19 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। जिनमें 4 प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किए गए।

हिन्दी में तत्काल भाषण प्रतियोगिता

इस प्रतियोगिता में कुल 19 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। जिनमें 4 प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किए गए।

हिन्दी श्रुतिलेखन प्रतियोगिता

इस प्रतियोगिता कार्यक्रम में इस कार्यालय के कुल 17 कार्मिकों ने भाग हिस्सा लिया। इनमें से कलु 4 प्रतिभागियों को पुसस्कार प्रदान किए गए।

इस प्रकार प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद में सभी प्रतियोगिताएँ सफलतापूर्वक सम्पन्न हुईं। अतः में श्री डी. रवि कुमार, प्रबंधक(मां.सं.) ने मुख्य महाप्रबंधक के साथ-साथ उपस्थित समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को कार्यक्रम में भाग लेने तथा इसे सफल बनाने हेतु धन्यवाद दिया।

हिन्दी पढ़े, हिन्दी पढ़ाएं
मातृभाषा की सेवा कर
देश को महान बनाएं.....

हिन्दी पखवाड़ा में भाग लेते प्रतिभागीगण

गौरवपूर्ण पल

स्थापना दिवस के अवसर पर मुख्य महाप्रबंधक द्वारा श्रेष्ठ कर्मचारियों को उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु प्रशस्तिपत्र एवं पुरस्कार प्राप्त करने हुए।

विश्व महिला दिवस के अवसर पर महिला सशक्तिकरण पर चर्चा में भाग लेते हुए नारी शक्ति

हिन्दी कार्यशाला के आयोजन में भाग लेते कर्मचारीगण

कार्यालय में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेते ईकाई के कर्मचारी

गौरवपूर्ण पल

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अवसर पर आयोजित 'सत्यनिष्ठता से आत्मनिर्भरता' विषय पर निबंध प्रतियोगिता में भाग लेते कार्यालय कर्मचारी गण

संविधान दिवस के शुभ अवसर पर शपथ ग्रहण करते मुख्य महाप्रबंधक एवं अन्य कर्मचारी

राष्ट्रीय सुरक्षा सप्ताह के अवसर पर शपथ ग्रहण करते हुए मुख्य महाप्रबंधक एवं अन्य कर्मचारी

अपर महाप्रबंधक द्वारा 'डिजिटल इंडिया' पर आयोजित विशेष कार्यक्रम के अवसर पर व्याख्यान देते हुए

शिक्षा का महत्व

एक समय की बात है। एक जंगल में कौआ, कुत्ता, कोयल और उल्लू चार दोस्त रहते थे। उन चारों में गहरी मित्रता थी। चारों मित्र एक-दूसरे के साथ मिल-जुल कर रहते थे। वे अपने सभी काम साथ-साथ करते थे। वे सभी एक साथ स्कूल में पढ़ते थे। उस स्कूल का शिक्षक जंगल का राजा शेर था। शेर सभी को अपने बच्चों की तरह प्यार करता था। और सभी को अच्छी तरह पढ़ाता था। उल्लू को छोड़कर सभी लोग अच्छी तरह पढाई करते थे। उल्लू थोड़ा मस्तीखोर था। वह दिन भर खेलता। वह एक तो स्वयं पढ़ाई नही करता, और दूसरी तरफ वह दूसरों को भी पढ़ने से रोकता।

वह कहता कि "पढ़ने-लिखने से कुछ नहीं होता है। मुझे देखों मैं दिन-भर खेलता हूँ। आराम करता हूँ और तुम तीनों पढ़तें हो और मस्ती नही कर पा रहे हो।"

उसकी बात को सुनकर कुत्ता महाराज बोला "अरे! मित्र उल्लू, तुम पढ़ क्यों नहीं रहे हो। कुछ दिनों के बाद परीक्षा होने वाली है। अगर तुम ठीक तरह से नहीं पढ़े, तो परीक्षा में असफल हो जाओगे।

कुत्ता महाराज के बात सुनकर उल्लू ने कहा, "अरे! मित्र, परीक्षा में अभी बहुत समय है। जब परीक्षा होगी। तो देखा जाएगा।

फिर कौआ ने कहा, "एक मित्र होने के नाते हम तुम्हे सलाह दे रहे हैं। उस पर थोड़ा ध्यान दो, वरना तुम फेल हो जाओगे।

इस पर आग बबूला होकर उल्लू ने कहा, "तुम अपनी सलाह अपने पास रखो। मुझे तुम तीनों से सलाह नहीं चाहिए। मुझे अच्छी तरह पता है कि मैं क्या कर रहा हूँ। तुम अपनी पढ़ाई देखो।

यह कहकर उल्लू महाराज वहाँ से चले गए।

तीनों मित्रों ने शेर को सारी बातें बताई। शिक्षक महोदय ने बहुत बार उल्लू को समझाया कि वह अच्छी तरह से पढ़ाई करे, लेकिन उल्लू महाराज पर इन बातों को कोई असर नहीं हुआ। जंगल के अन्य जानवरों ने भी उल्लू महाराज को समझाया। इसका भी असर उल्लू महाराज पर नहीं हुआ। वह कहाँ किसी की बातें सुनने वाले थे।

परीक्षा का समय आ गया। सभी ने अपनी परीक्षाएं दी। अब परिणाम का समय था। जिस चीज का डर था वही हुआ। तीनों तो अच्छें अंक से पास हो गए, लेकिन उल्लू महाराज फेल हो गए। जंगल में उसे घनघोर तिरस्कार का सामना करना पड़। चारों ओर जंगलवासी उसे चिढ़ाते, उसका मजाक उड़ाते। तिरस्कार के कारण अब वह दिन में बाहर नहीं निकलता। अब वह सिर्फ रात में जब सब जंगलवासी सोते, तब वह बाहर निकलता। कौआ सबसे ज्यादा नम्बर लाया, इसलिए कौआ को सबसे बुद्धिमान पक्षी की उपाधि मिला। कोयल गाने में अच्छी थी, अपनी मधुरता के कारण उसे मीठी बोली वाली पक्षी कहा गया। कुत्ता अपने बड़े जनों का खूब आदर और सम्मान करता था। बड़ों की आज्ञा का पालन करता था। इसलिए उसे वफादार और सच्चा सेवक पशुओं की श्रेणी में रखा गया।

इस प्रकार हम देख सकते है कि तीनों ने अच्छी तरह से पढ़ाई की और समाज में उन्हें उचित सम्मान और आदर प्राप्त हुआ। और इतना समझाने के बाद भी उल्लू पर कोई असर नहीं हुआ। अतः उसे समाज में कोई आदर और सम्मान प्राप्त नहीं हुआ। अब वह सभी से मुहँ छुपाकार रहता है।

"अगर समाज में पाना है मान,
तो करों पढ़ाई का सम्मान"

✸ ✸ ✸

शुभंकर राम
पर्यवेक्षक(राजभाषा)

ईश्वरीय प्रेम के बारे में बताने वाली कुछ रोचक बोधकथाएँ

खोयी हुई भेड़: मानों किसी के पास सौ भेड़ें हैं और उनमें से कोई एक खो जाए, तो क्या वह बाकी भेड़ों को खुले में छोड़ कर खोई हुई भेड़ का पीछा तब तक नहीं करेगा, जब तक कि वह उसे मिल न जाए। फिर जब उसे भेड़ मिल जाती है तो वह उसे प्रसन्नता के साथ अपने कन्धों पर उठा लेता है। और जब घर लौटता है तो अपने मित्रों और पड़ोसियों को बुलाकर उनसे कहता है, 'मेरे साथ आनन्द मनाओ क्योंकि मुझे मेरी खोयी हुई भेड़ मिल गयी है।' मैं तुमसे कहता हूँ, इसी प्रकार किसी एक पापी मन, उन निन्यानवे धर्मी पुरुषों से ज्यादा महत्वपूर्ण है क्योकि उसका पाप समाप्त हुआ और वह धर्म के मार्ग पर वापस आया है। यह स्वर्ग में कहीं अधिक आनन्दमय उत्सव के रूप में मनाया जाएगा।

> ईश्वर के लिए प्रत्येक व्यक्ति महत्वपूर्ण है। कोई ज्यादा या कम महत्वपूर्ण नही है। ईश्वर सभी को समान रूप में आशीर्वाद देता है। जब पापी ईश्वर के शरण में वापस आएगा तभी वह आनन्दित होगा।

2.खोया हुआ सिक्का: मानो कोई औरत है जिसके पास दस चाँदी के सिक्के हैं और उसका एक सिक्का खो जाता है तो क्या वह घर में दीया जलाकर सावधानीपूर्वक तब तक नहीं खोजती रहेगी जब तक कि वह उसे मिल न जाये? और जब उसे सिक्का मिल जाता है तो अपने मित्रों और पड़ोसियों को पास बुला कर कहती है, 'मेरे साथ आनन्द मनाओ क्योंकि मेरा सिक्का जो खो गया था, मिल गया है।' मैं तुमसे कहता हूँ कि इसी प्रकार एक पापी मन ईश्वर के शरण में वापस आ जाए, तो स्वर्ग में इसे आनन्द उत्सव के रूप मनाया जायेगा।

3.खोया हुआ बेटा: एक व्यक्ति के दो बेटे थे। तो छोटे ने अपने पिता से कहा, 'जो सम्पत्ति मेरे हिस्से में आती है, उसे मुझे दे दो। तो पिता ने उन दोनों को अपना धन बाँट दिया। थोड़े समय बीते थे कि छोटे बेटे ने अपनी समूची सम्पत्ति ले किसी दूर देश के लिए चल पड़ा। वहाँ जँगलियों की तरह उद्दण्ड जीवन जीते हुए उसने अपना सारा धन बर्बाद कर दिया। जब उसका सारा धन समाप्त हो गया तब उसी देश में चारो ओर व्यापक अकाल पड़ा। तो वह अभाव में रहने लगा। वह उसी देश में एक व्यक्ति के यहाँ पर मज़दूरी करने लगा उसने उसे अपने खेतों में सुअर चराने भेज दिया। वहाँ उसने सोचा कि उसे वे फलियाँ ही पेट भरने को मिल जायें जिन्हें सुअर खाते थे। पर किसी ने उसे एक फली तक नहीं दी। तब उसके होश ठिकाने आए तो वह बोला, 'मेरे पिता के पास कितने ही ऐसे मज़दूर हैं जिनके पास खाने के बाद भी खाना बचा रहता है और मैं यहाँ भूखा मर रहा हूँ। तो मैं यहाँ से उठकर अपने पिता के पास जाऊँगा और उससे कहूँगा कि "पिताजी, मैंने स्वर्ग के ईश्वर और आपके विरुद्ध जाकर पाप किया है। अब आगे मैं आपका बेटा कहलाने योग्य नहीं रहा हूँ। मुझे अपना एक मज़दूर समझकर रख लें।" तो वह उठकर अपने पिता के पास चल दिया। अभी वह कुछ दूरी पर ही था कि उसके पिता ने उसे देख लिया और उसे अपने पुत्र पर बहुत दया आयी। दौड़ कर उसने उसे अपनी बाहों में समेट लिया और चूमा। पुत्र ने पिता से कहा, 'पिताजी, मैंने पाप किया है, मैं अब आपका पुत्र कहलाने योग्य नहीं हूँ।' किन्तु पिता ने अपने सेवकों से कहा, 'जल्दी से नये वस्त्र निकाल कर लाओ और इसे पहनाओ। इसके हाथ में अँगूठी और पैरों में चप्पल पहनाओ। कोई उत्तम पकवान बनाओ। आज हम सभी मिलकर आनन्द मनायें। तो वे सभी लोग आनन्द मनाने लगे। उस समय उसका बड़ा बेटा जो खेत

काम में कर रहा था, जब वह वापस आया घर के पास पहुँचा तो उसने गाने नाचने के स्वर सुने। उसने अपने एक सेवक को बुलाकर पूछा, 'यह सब क्या हो रहा है?' सेवक ने उससे कहा, 'आपका भाई आ गया है और आपके पिता उसे सुरक्षित और स्वस्थ पाकर बहुत आन्नदित है!' बड़ा भाई आग बबूला हो उठा, वह भीतर जाना तक नहीं चाहता था। तो उसके पिता ने बाहर आकर उसे समझाया। लेकिन उसने पिता को उत्तर दिया, 'देखिये पिताजी मैं बरसों से आपकी सेवा करता आ रहा हूँ। मैंने आपकी किसी भी आज्ञा का विरोध नहीं किया, लेकिन आपने मुझे तो कभी एक उपहार तक नहीं दिया । लेकिन जब आपका यह बेटा आया जिसने कुकर्मों में सारा धन उड़ा दिया, उसके लिए आपने उत्सव मनाया।' पिता ने उससे कहा, 'मेरे पुत्र, तू सदा ही मेरे पास है और जो कुछ मेरे पास है, सब तेरा है। किन्तु हमें प्रसन्न होना चाहिए और उत्सव मनाना चाहिये क्योंकि तेरा यह भाई, जो मर गया था, अब फिर जीवित हो गया है। यह खो गया था, जो फिर से हमें अब मिल गया है।'"

प्रस्तुति- डी. प्रमिला सागर
वरिष्ठ कार्यालय सहायक(मा.सं)

पी राजशेखर
मानव संसाधन

जी वरलक्ष्मी
वरि. कार्यालय सहायक(मा. सं.)

राष्ट्रीय त्योहार: मकर संक्रांति

मकर संक्रांति हिंदुओं के महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक है और भारत के लगभग सभी प्रांतो में मनाया जाता है। यह त्योहार हर वर्ष 14 या 15 जनवरी को मनाया जाता है। संक्रांति पर्व को हर राज्यों में अलग-अलग नाम से मनाया जाता है। यह मकर राशि में सूर्य के गोचर के पहले दिन और लंबे दिनों की शुरुआत का प्रतीक है। यह सूर्य देव को समर्पित है।

जम्मू में यह पर्व 'उत्तरैन' और 'माघी संगरांद' के नाम से विख्यात है। कुछ लोग इसे उत्रैण, अत्रैण' अथवा' अत्रणी' के नाम से भी जानते है। इससे एक दिन पूर्व लोहड़ी का पर्व भी मनाया जाता है, जो कि पौष मास के अन्त का प्रतीक है। मकर संक्रान्ति के दिन माघ मास का आरंभ माना जाता है, इसलिए इसको' माघी संगरांद' भी कहा जाता है।

उत्तर प्रदेश में यह मुख्य रूप से दान का पर्व है। प्रयागराज में गंगा, यमुना व सरस्वती के संगम पर प्रत्येक वर्ष एक माह तक माघ मेला लगता है जिसे माघ मेले के नाम से जाना जाता है। 14 जनवरी से ही प्रयागराज में हर साल माघ मेले की शुरुआत होती है। समूचे उत्तर प्रदेश में इस व्रत को *खिचड़ी* के नाम से जाना जाता है तथा इस दिन खिचड़ी खाने एवं खिचड़ी दान देने का अत्यधिक महत्व होता है।

बिहार में मकर संक्रान्ति को खिचड़ी नाम से जाना जाता है। इस दिन उड़द, चावल, तिल, चिवड़ा, गौ, स्वर्ण, ऊनी वस्त्र, कम्बल आदि दान करने का अपना महत्त्व है।

महाराष्ट्र में इस दिन सभी विवाहित महिलाएँ अपनी पहली संक्रान्ति पर कपास, तेल व नमक आदि चीजें अन्य सुहागिन महिलाओं को दान करती हैं। तिल-गूल नामक हलवे के बाँटने की प्रथा भी है। लोग एक दूसरे को तिल गुड़ देते हैं और देते समय बोलते हैं -"तिळ गूळ घ्या आणि गोड़ गोड़ बोला" अर्थात तिल गुड़ लो और मीठा-मीठा बोलो।

बंगाल में इस पर्व पर स्नान के पश्चात तिल दान करने की प्रथा है। यहाँ गंगासागर में प्रति वर्ष विशाल मेला लगता है। मकर संक्रान्ति के दिन ही गंगा जी भगीरथ के पीछे-पीछे चलकर कपिल मुनि के आश्रम से होकर सागर में जा मिली थीं। मान्यता यह भी है कि इस दिन यशोदा ने श्रीकृष्ण को प्राप्त करने के लिये व्रत किया था। इस दिन गंगासागर में स्नान-दान के लिये लाखों लोगों की भीड़ होती है। लोग कष्ट उठाकर गंगा सागर की यात्रा करते हैं। वर्ष में केवल एक दिन मकर संक्रान्ति को यहाँ लोगों की अपार भीड़ होती है। इसीलिए कहा जाता है-"सारे तीरथ बार बार, गंगा सागर एक बार।"

तमिलनाडु में इस त्योहार को पोंगल के रूप में चार दिन तक मनाते हैं। प्रथम दिन भोगी-पोंगल, द्वितीय दिन सूर्य-पोंगल, तृतीय दिन मट्टू-पोंगल अथवा

केनू-पोंगल और चौथे व अन्तिम दिन कन्या-पोंगल। इस प्रकार पहले दिन कूड़ा करकट इकठ्ठा कर जलाया जाता है, दूसरे दिन लक्ष्मी जी की पूजा की जाती है और तीसरे दिन पशु धन की पूजा की जाती है। पोंगल मनाने के लिये स्नान करके खुले आँगन में मिट्टी के बर्तन में खीर बनायी जाती है, जिसे पोंगल कहते हैं। इसके बाद सूर्य देव को नैवैद्य चढ़ाया जाता है। उसके बाद खीर को प्रसाद के रूप में सभी ग्रहण करते हैं। इस दिन बेटी और जमाई राजा का विशेष रूप से स्वागत किया जाता है।

राजस्थान में इस पर्व पर सुहागन महिलाएँ अपनी सास को वायना देकर आशीर्वाद प्राप्त करती हैं। साथ ही महिलाएँ किसी भी सौभाग्यसूचक वस्तु का चौदह की संख्या में पूजन एवं संकल्प कर चौदह ब्राह्मणों को दान देती हैं। इस प्रकार मकर संक्रान्ति के माध्यम से भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की झलक विविध रूपों में दिखती है।

असम में मकर संक्रान्ति को माघ-बिहू अथवा भोगाली-बिहू के नाम से मनाते हैं।

आन्ध्र प्रदेश-तेलंगाना में संक्रांति का मतलब होता है... कालीन.. दलिया, अलाव, मुर्ग लडाई खेल ... इतना ही नहीं. इनके अलावा, कोनसीमा के लोगों द्वारा मनाए जाने वाले प्रभला तीर्थ का विशेष उल्लेख किया जाना चाहिए। चार सौ सालों से चला आ रहा यह पर्व देश के अन्य हिस्सों में होने वाले त्योहार से थोड़ा अलग हरे-भरे कालीन जैसी ढालें... कोनासीमा एक दर्शनीय स्थल की तरह दिखती है, जहां पर स्वागत करते नारियल के पेड़ उनकी लकीरों पर, नदियों और नहरों में बहते पानी के साथ खड़े हैं। बीच में तीर्थ प्रभा तीर्थ इन प्राकृतिक सुंदरियों के लिए एक आध्यात्मिक आकर्षण जोड़ता है और संक्रांति उत्सव में विशिष्टता लाता है। लोगों की मान्यता है कि मकर राशि के बाद आने वाले उत्तर-पूर्व के दौरान यदि धाराएँ गाँव के बाहरी इलाके को पार कर जाएँ तो गाँव हरा-भरा हो जाएगा। यह त्योहार 400 से अधिक वर्षों से इस क्षेत्र के नब्बे से अधिक गांवों में मनाया जाता रहा है। इनमें से सबसे बड़ा जग्गन्नाथोटा में उत्सव है। कोट्टापेटा,

अंबाजीपेटा, मुम्मिदिवरम, उप्पलागुप्त, मंडीकुडुरु कुछ ऐसे स्थान हैं जहां यह बड़े पैमाने पर किया जाता है।

विशेष रूप से संक्रांति पर्व 3 दिनों तक मनाया जाता है। अर्थात्, भोगी, संक्रांति, कनुमा। होलिका दहन के दिन सभी लोग सुबह उठकर अलाव जलाते हैं। संक्रांति के दिन नए कपड़े, प्रसाद और मिठाई के साथ भगवान की पूजा की जाती है। तीसरे दिन मवेशियों को बहुत सजाया जाता है और उनकी पूजा की जाती है। यह त्योहार एक ऐसा समय है जब किसान अपनी विलासिता को हमेशा के लिए बनाए रखने के लिए अनाज के दूध से पकाए गए प्रसाद के साथ इंद्र और विष्णु की पूजा करते हैं। संक्रांति पर्व के दिन अलग -अलग जगहों से लोग अपने गृहनगर आते हैं और सभी मिलकर खुशी-खुशी उत्सव मनाते हैं। त्योहार के तीसरे दिन, आपसी भाई चारा तथा सौहार्द्र बनाए रखने के लिए रंगोली के माध्यम से पड़ोसी घरों के साथ संपर्क स्थापित किया जाता है।

***

प्रस्तुति— (नरेश)

क. कार्यालय सहायक(हिन्दी)

माँ

माँ के लिए कुछ लिख सके
ऐसा शब्द वेद व्यास भी
न तलाश पाये ।
माँ के लिए कुछ कह पाए
ऐसा शब्द सरस्वती भी
न सोच पायी ।
माँ के सामने अम्बर छोटा है।
माँ के सामने सागर उथला है।
माँ के सामने पर्वत कंकड़ सा।
माँ के सामने इंद्रधनुष फीका है ।
माँ है तो सृष्टि का अस्तित्व है ।
माँ है तो धरती की पहचान है ।
माँ है तो ब्रह्मांड का मान है ।
माँ के आगे सब कुछ थोड़ा है ।
माँ एक शब्द में सम्पूर्णता है ।
माँ एक भाव का राग है।
माँ एक प्रार्थना का स्वर है।
माँ एक पूर्णता का अहसास है ।

✸ ✸ ✸

— (श्रीमती संध्या रानी)
वरिष्ठ कार्यालय सहायक

महामारी

चारो ओर हाहाकार मचा,
चारो ओर छाई महामारी है।
संकट में फँसी धरती है।
चारो ओर छाई महामारी है।
लोग अपने ही घरों में कैद,
बना ली अपनों से दूरी।
सुख-दूख में साथ नही हम,
यही बन गई हमारी मजबूरी।
कहा गए प्रभु हमारे,
जब छाई विपदा भारी है।
क्यों नहीं आते धरती पर,
शायद इसमें गलती हमारी है।
अब क्षमा भी कर दो प्रभु,
अब बस उद्दार करों हमारा।
बचा लो अपने बच्चों को तुम
बचा लो अपना सृष्टि प्यारा।
चारो ओर हाहाकार मचा,
चारो ओर छाई महामारी है।

✸ ✸ ✸

— श्रीमती पुजा सिंह

नैतिक संदेश

जो कहते है-
"तुम नहीं कर सकते"
या "तुमसे नहीं होगा"
वास्तव में
वे डरते है कि
"तुम करोगे"

अन्तर्मन से पूरे दिन आवाज आती रहती है
"मुझे लगता है यह मेरे लिए सही है"
"मैं जानता हूँ यह गलत है"
"ना शिक्षक, उपदेशक, माता-पिता, दोस्त
और ना हि कोई ज्ञानी व्यक्ति निर्णय ले सकते है"
आप के लिए क्या उपर्युक्त है
आप अपने अन्तर्मन की सुने।

प्रतिदिन सुबह अपने आप से पाँच बार कहै-
1) मैं श्रेष्ठ हूँ
2) मैं कर सकता हूँ
3) ईश्वर सदा हमारे साथ है
4) मैं विजेता हूँ
5) आज मेरा दिन है।

चिनमय गराई
प्रबंधक(त. प्र)

श्री के. मधु वर्मा
वरि. कार्यालय सहायक

నిరీక్షణం

నీ చిరునవ్వుతో మొదలు,
నా హృదయంలో సెగలు
నీ పలుకుల హేయలు,
నా మనసులో లయలు
నీ వంపుల వలయం,
నా రక్తంలో ప్రళయం
నువ్వు నేను ఒక్కటయ్యే తరుణం,
స్వర్గమే కదా ప్రతిక్షణం
ఆ సమయం కోసమే నా ఈ నిరీక్షణం

निरीक्षणम

नी चीरूनवुतो मोदलु
ना हृदयमलो सैगलु
नी पलुकुला हेयलु
ना मनसु लो लयलु
नी वमपुला वलयम
ना रक्त्तलो प्रलयम
नुवु नेनु उक्काट्य्ये तरुणम
स्वर्ग मे कदा प्रतिक्षणम
आ समयम कोसमेय ना ई निरीक्षणम

प्रतिभूति मुद्रणालय में नई नियुक्तियाँ

श्री सुहाश दत्ता
पर्यवेक्षक (मुद्रण)

श्री तरुण कुमार गौतम
पर्यवेक्षक (मुद्रण)

सुश्री सुप्रिया दास
पर्यवेक्षक (मुद्रण)

श्री सायुराज ए. आर
पर्यवेक्षक (मुद्रण)

श्री ओमजी मिश्रा
पर्यवेक्षक (सू. प्रौ)

श्री प्रशान्त हनुमंत खोपड़े
पर्यवेक्षक (मुद्रण)

श्री पी. नितिन गुप्ता
पर्यवेक्षक (नियंत्रण)

सुश्री ई. सुनिता
पर्यवेक्षक (नियंत्रण)

श्री वैभव सुभाष साठे
पर्यवेक्षक (सू. प्रौ)

श्री शुभंकर राम
पर्यवेक्षक(रा.भा)

एस रवि तेजा
पर्यवेक्षक(नियंत्रण)

श्री बोडा नरेश
कनिष्ठ कार्यालय सहायक(हिंदी)

సుశ్రీ ఈ. సునిత
పర్యవేక్షక (నియంత్రణ)

నవ్వు కళ

నవ్వు ఒక అవధిలేని భాష !
నవ్వు ఒక అందమైన పలకరింపు.
నవ్వు ఇతరులకు ఇచ్చే ఒక సులభమైన బహుమతి.
నవ్వు మన తోడు ఉంటే మన జీవితం మధురమైన జ్ఞాపకాలతో నిండిపోతుంది.
ఆ నవ్వు మన రోజుల్లో ఉన్న ప్రతిఒక్కరికి అందిస్తూ ముందుకు సాగాలి.

నव्वु वोका अवदीलेनी भाषा !
नव्वु वोका अन्दमैना पलकारिंपु ।
नव्वु इतरुलकु इच्छे वोका सुलभमैना बहुमती |
नव्वु मना तोडु उन्टे मना जीवितम मैना मधुरामैना ज्ञपाखालतो निन्द्रीपोतुन्द्री |
आ नव्वु मना रोजुल्लो उन्टे प्रति वक्करीकी अन्दीस्तु -मुन्द्रुकु सागाली ।

प्रदोन्नति हेतू सहर्ष बधाईयाँ

श्री गणेश चौव्हान
वरि. पर्यवेक्षक(मुद्रण)

श्री पी. राजेश
वरि. पर्यवेक्षक(मा.प्र)

श्री बी. रुशीधर रेड्डी
वरि. पर्यवेक्षक(मा.प्र)

श्री के. नरसिम्मा रेड्डी
पर्यवेक्षक(नियंत्रण)

श्रीएन.सुव्वा राव
फोरमेन(मुद्रण)

श्री के. विक्सापति
फोरमेन(नियंत्रण)

श्री एन. विवेकानंद
फोरमेन(नियंत्रण)

श्री अच्युता राव
फोरमेन(नियंत्रण)

श्रीवी.सुरेश
फोरमेन(नियंत्रण)

श्री बी. रमेश
फोरमेन (नियंत्रण)

श्री के. मधु वर्मा
वरिष्ठ कार्यालय सहायक

श्री एम. पवन कुमार
प्रचालक(नियंत्रण)

श्री ए.सुंदर
वरिष्ठ तकनीशीयन(मुद्रण)

श्री के. मोहन
वरिष्ठ तकनीशीयन(मुद्रण)

नारी का सम्मान करो

मैं नारी हूँ, मै कली हूँ, मै फुलवारी हूँ ।
मैं दर्शन हूँ, मै दर्पण मैं हूँ, मैं नाद हूँ, मैं ही गर्जन हूँ ।।
मैं बेटी हूँ, मैं माता हूँ, मैं बलिदानों की गाथा हूँ ।
मै श्रीमद्भगवद्गीता हूँ, मैं द्रोपदी हूँ, मैं सीता हूँ ।।

पुरुषों की इस दुनियाँ ने मुझे कैसी नियति दिखलाई।
कभी जुआ में हार गये, कभी अग्नि परीक्षा दिलाई।।
कलयुग हो या सतयुग इल्जाम मुझी पर आता है।
क्यो घनी अन्धेरी सड़को पर मन चलने से घबराता है।
मैं डरती हुँ, मैं मरती हुँ, जब सफर अकेले करती हूँ ।।

डर मुझेमें तब बढ़ता है, जब कोई साया पीछा करता है ।
मेरी मुठी बँध जाती है, दिल की धड़कन बढ़ जाती है ।।
यह तरल पसीना माथे पर, दिल में मेरे घबराहट है ।
जाने ये किसका साया है, जाने किसकी यह आहट हैं।।
अन्धेरों में उन हाथों ने बाहों में मुझे खिच लिया।
एक ने मुँह पर हाथ रखा और एक ने आँचल खिच लिया।।

नारी के सम्मान को मिलकर तार- तार सा कर डाला ,
मर्यादा के आँचल को फिर जार- जार सा कर डाला।
मारा है, मुझको पीटा है , बालों से मुझे घसीटा है ,
फिर बर्बरता की उन सारी सीमाओं को तोड़ दिया .
उन घनी अन्धेरी सड़को पर फिर मुझे तड़पता छोड़ दिया

सन्नाटे में चिख रही थी, खुन से लतपत हो काया।
सबने तस्वीरें खींचीं, कोई मदद को आगे न आया।।
कोई मदद करो, कोई मदद करो, कोई मदद करो।
यह चीख-चीख कर, चीख भी मुझसे रूठ गई।
जब होश में आई, इस समाज की बाते सुनकर टुट गई।।

परिवार की बदनामी होगी, सब मुझे यहीं समझाते है ।
ये नई उम्र के लड़के है थोड़े तो बहक ही जाते हैं ।।
अरे भूल जाओ जो हुआ, उससे यह लड़के बच ही जायेंगे।
तुम लड़की हो, दुनियां वाले तुम पर ही प्रश्न उठायेंगे ।।

क्यो कोई नहीं था साथ मे ?
क्यो निकली अकेली रात में ?
क्या मेक अप था? क्या गहने थे ?
क्या छोटे कपड़े पहने थे ?

यह प्रश्नों की भूल - भुलैया में सच्चाई कहीं खो जाती है ।
सब भूल जाओ कहने वालों क्या तुम्हे शर्म नहीं आती है।।
कैसे भूलूँ उन रातों को, मुझको छुते उन हाथों को।
कैसे भूलूँ उन चीखों को, कैसे भूलूँ उन तकलीफों को।।
मेरे शरीर की चोट तो बस कुछ दिन में ही भर जायेंगे।
लेकिन मन की पीड़ा सारी उम्र साथ रह जायेंगे।।

सब भूल जाओ, सब भूल जाओ, कहने वालो।
याद रखो, यह आखरी गलती आपकी भी हो सकती है।
कल सड़क पर बेसूद बहन या बेटी आपकी भी हो सकती है।।
और इस अहसास से बढ़कर कोई दर्द नहीं हो सकता है।
जो नारी का अपमान करे वो मर्द नही हो सकता है।।
जब सजा मौत की लागू होगी, सारे दोषी लड़कों पर,
फिर कोई लड़की नहीं मिलेगी खुन से लथपथ सड़को पर,
तो आओ प्रण लो मेरे साथ और यह आह्वान करो।
अपनी मर्यादाओं को समझों।
नारी का सम्मान करों, नारी का सम्मान करो।।

(एस .सुधाकर राव)
पैकर

::SECURITY PRINTING ::

Security Printing encompasses areas including bank notes, stamps credit cards, cheques, postal orders and many types of top secret Government information.

There are following three main concerns for security printing:--

1) To secure the confidentiality of the documents, through origination and production from the preparation of artwork to proofing, platemaking and printing.

2) To ensure the authenticity of the documents and make them readily identifiable by all concerned.

3) To make copying, duplicating and forgery of the documents as difficult as possible.

Cheque Printing :-- Unlike bank notes, cheques themselves have no particular value-it is the personalized information written on the cheque which gives it value. The security factors for cheques printing are, therefore, centered more around the problem of fraudulent issue of cheques rather than copying and forgoing.

The information to be printed on a cheques are as follows:--

Credit Cards :-- Plastic cards were originally used for obtaining or transferring money from one account to another, or to obtain credit within predetermined guidelines. These basic functions are still central to the plastic card economy, although they are now capable of recording far more information and performing a greater variety of functions.

Usually the cards are multiplier laminates on a polyvinyl chloric (pvc) base, printed on both sides, with a protective film layer and containing additional material such as magnetically-encoded strips, embossed information and holograms.

Caliper & Dimensions :-- Cards must conform to the appropriate ISO standards in order to function correctly with the relevant machinery and processing equipment. Printing may be by screen process or litho depending on the quality and effect required.

Screen will be preferred for solid lay down and thicker film of ink, whereas litho may be used for more subtle images and halftone reproductions.

Protection :- protection of the printed image may be by means of a fine coat of varnish or lacquer, or for more complete protection a plastic film may be used to complete protection, a plastic film may be used to complete the lamination on each side.

Embossing :-- it is by physical deformation of the laminate, requiring an individual master die to be made for each card. The embossed image is then formed by heat and pressure in a stamping press. The relief height of the imager needs to be preciously controlled in order to register correctly in the recording equipment. Very shallow embossing will mean that the digits may not be fully recorded, whereas very high an image could mean that the card may not be received, or premature were and distortion of the image could occur.

Magnetic Strip :- Magnetic strip is generally bonded to the card prior to final limitations. This is subsequently encoded with invisible magnetic information, which can only be decoded in an appropriate reading device. Information from the magnetic strip can be used to activate automated machinery in cash dispensers, credit recorders, communications devices, security entry doors etc.

Signature panels :-- Signature panels are a feature of many plastic cards. These panels or strips are bonded to the card after final lamination. The card holder is required to make a signature across the panel, which generally has a printed background image to avoid the possibility of an altered or substituted signature.

Holograms :--holograms are often included in plastic cards as identity markers and security devices, An original holograms is produced by photographing an object with laser light from different angles and superimposing the image optically to reproduce the original with a three dimensional effect. There are different types of holograms, but for printing purpose the most commonly used is called embossed hologram.

An embossed hologram is a lamination of several film layers, including a base of stable polyester material and two or more layers of metallized foil containing the printed and embossed images, plus a protective film layer or coating.

Metallization is the deposition of vaporized metal on to a plastic base to give a pure even film of metal, just a few microns in thickness.

Embossing of the foils is normally from a metal master derived from the original hologram or three-dimensional design. It is to be noted here that embossing means more in the form of a subtle variation in the surface structure of the metallized films, which are only a few microns in thickness.

Super impression of the printed and embossed films will give the unique three dimensional effects obtainable only by embossed holograms.

Holograms are very difficult to photograph, which makes them ideal for security purposes. The specialized techniques required to produce holograms in the first instance makes forgery an equally unlikely possibility.

Today, nearly any image or model can be transferred into holographic foil.

HOLOGRAM TYPES :--

Nearly anything that can be photographed can be made into a hologram image. However there are different characteristics which will produce different results. As on today, there are four holographic effects which can be captured in a foil image.

1) Holographic Patterned foils :-- These are available in variety of standard styles. Although not actually three-dimensional the shimmering, prismatic patterns cut into these foils create an image of depth and a rainbow of shifting color as the angle of view changes.

2) Three-Dimensional holograms :- These are created from inanimate objects. Here the 3-D illusion is quite

-D movie on a two-dimensional surface. In most cases, a motion picture camera is employed to capture a sequence of movement.

USES :-- Holograms are truly unique expressions of creativity and a highly effective form of visual communication that demands attention. Today holograms are being used for :--

1) Security :- Hologram are being used as anti-duplication devices for documents, credentials checks, transportation passes, even tickets, credit card, and identity cards.

Holograms are often included in plastic cards as identity markers. For printing, the type most commonly used is the embossed holograms.

An embossed hologram is a lamination of several film layers, including a base of stable polyester material and two or more layers of metalized foil containing the printed and embossed images plus a protective film layer of coating.

Metallization is the deposition of vaporized method onto a plastic base to get a pure, even film of metal just a few microns in thickness Embossing of the foils is normally from a metal master derived of from the original hologram or 3-D design. It is important to note that embossing means a subtle variation in the surface structure of the metalized films which are only a few microns in thickness.

Superimposition of the printed and embossed film will give the unique 3-D effect obtainable only by embossed holograms. Holograms are very difficult to photograph which makes them ideal for security purposes.

2) Book Covers :-- Many publisher are using holograms to add further impact to their book jackets. The famous National Geographic hologram cover of a pre-historic skull that became the magazine's most requested issues.

3).Print ads, direct mail :- The volume in increasing hologram foils, can really make a product stand out.

4) Packaging :-- Those who need high impact packaging in an over-crowd market. Holograms are also a preferred method of brand protection.

5) Sports trading cards :- these are already replete with foil, holograms and stereogram images of sports heroes in motion represent the ultimate in trading card value.

--- : BAR CODING :---

WHAT IT IS :-- Bar code is a display of parallel rectangular shaped bars and spaces, arranged in a specific predetermined pattern to represent a corresponding figure, letter of symbol, Bar code may be likened to a current printed version of the old Morse code.

HOW IT WORKS :-- Bar code is a language. It can be read by a light source(scanner) and translated by a program(reader) which will turn the symbols(or language) into usable, useful data.

The data can be harnessed to relay a variety of important information to help any organization regardless of size.

The dynamics and sophistication of the programs turn the data into a rainbow of helpful categories, which results in improved operations and tremendous for the organization using the bar code.

WHY IT'S USED :-- There are many reasons why a company selects Bar Coding to improve data entry into its computer network.

--Speed -- Reliability
--Control -- Durability
--Accuracy -- Portability
--Non-Control Reading

Of these, speed, control and Accuracy seem to be pre-eminent for conversion to Bar Code in the Graphic Arts Industry. In almost every case, applications have markedly improved the collection of important information and vital data while creating areas of significant savings.

Bar code is a true phenomenon, bringing valuable new procedures, that translate into important advantages for those organizations that use it.

WHERE IT'S USED :-- Listed below are some of the current Bar Code markets. Keep in mind that tenure are new applications every day of the week. The dynamics of these and other markets change so quikly and so grtly that even through we can produce such a list, there will be many areas that are in transition and others where unique software can alter aspects of many of the new markets. There is new potential in old market, and new markets surface daily.

TYPE OF BARCODE AND DESCRIPTION :--

Monarch STD Code:-

Numeric Code. 7-elements (2-wide, 5-Narrow) usually (1) Wide space(1) Wide Bar, 18-different Width.

Code 39 AKA : Intermec.

Alpha/Numeric Code 9-Elements(3)Always Wide-either bars or spaces. Built in check-digit.

Code 49 from : Intermec

Unique New code. Electrically reproduced. Designed to carry the most data in the smallest space. Built-in-check-digit on both the rows and columns for secure data health industry.

Code 16K From: Laser Lite Systems

Similar to code 49, But not as complex. Combines UPC and IBM 128, Check-digit only on each row. Publication Field.

HOW BAR CODES ARE STRUCTURED :-

Bar Code symbology (coding, language)falls into(2) different kinds of structures. Currently, all Bar Codes can be called either Discrete or continuous codes.

The Continuous Code uses the space between the bars of the printed code to carry data. It is normally printed by a direct imaging system and and cannot be printed using impact numbering device (except with a recent Leibinger innovation, which makes this possible)

Examples of continuous code : UPS/EAN, 2 of 5 interleave, plessy, etc.

As a printer, you will be interested mainly in Discrete Bar Code. These codes do not use the ICG (intercharacter Gap) as part of their symbology. This allows you greater flexibility in the method selected to print the Barcode.

Example of Discrete Code:- Interence Code 39, Identicon (straight) 2 of 5 non-interleave, Monarch_ Codabar, IBM, Nixdorf, etc.

CONTINUOUS CODES :- The most commonly seen and used symbology is the UPC/EAN (Universal Prod-

uct Code/European Article Number). This is fixed code which provides information to an inventory base system, it describes, the product(manufacture, weight, volume, size, etc) .You see the UPC/EAN codes every where from grocery to toy stores. The main function is inventory control. The code is fixed for that product and is printed by plate. since it is a continuous code, impact and sequential numbering are not used.

A popular continuous code is the 2 of 5 interleave (1-2/5). Its main advantage is its ability to conserve space for a given series of sequential numbers. It is a numeric code only (no alpha). Since it is a continuous code by definition, the space hold data. It requires approximately 40% less area to print the length of the 1-2/5 than its counterpart, the 2 of 5 non-interleave.

The market area for the 1-2/5 is getting smaller each day, with the book publishing and library industries, the principal users.

Normally, the 1-2/5 is a continuous code, which can only be reproduced using non-impact direct imaging systems. The only deviation is a recent creation of Leibinger's—an electronically-controlled impact numbering system. With this installation, it is possible to number the 1-2/5 Bar Code via impact at speeds in excess of 650 SFM, going one wide on a web press.

DISCRETE BAR CODE :-- These codes are of special interest to all printers. Applications can be seen in chart on page 1

INTERMEC CODE 39 :-- it is the most popular sequential code used throughout the world today. It is a simple, self contained code that has built-in check digits to make de-coding easier. It is an alpha/numeric code (where most other discrete codes are not).it has 9 elements (6-narrow and 3-wide either Bars or spaces). Discrete, by definition, allows for intercharacter gap which lends itself to an impact numbering machine, whether it be for press, collator, letterpress, encoders, etc.

DENSITY VS CPI :-- CPI (Character per Inch) as used in describing codes.

DENSITY can have a large variety of characters per inch, depending upon whether or not it is a low, medium or high density Bar Code. For example, a medium density Code 39 could range any where from 7.34 CPI to 2.79 CPI.

CPI (Character Per Inch) is a more refined description. It is the combination of all the narrow elements and the wide elements, plus ICG (Intercharacter Gap) of one Character set divided into 1.00 inch. This will yield CPI, Example: Code39, a medium density code, with a density of 5.4 can in reality (once you add up all the narrow, wide and ICG of 0.053' end up with a CPI of 4.6.

MONARCH CODABAR :-- it is in wide use today, especially in a few specific markets. It is second to Code 39 since the Codabar is only a numeric code. However, it only has 7 elements (usually 2 are wide and 5 are narrow). This, of course, would make it slightly shorter in the length of the printed image (if comparing to Code 39)/ICG, as in the case of Code 39, presents hardly any problems when it comes to the printed image. Since the scanner manufacturing specifications may dictate certain restrictions for the ICG, it does become an issue, which needs to be addressed regardless of the discrete code that is employed.

2 OF 5 NON-INTERLEAVE (straight) -- is used less frequently than the Code 39 or Codabar. It is a numeric code only and has 5 elements (usually 2-wide, 3-narrow). It does have a shorter version of the stop/start code but still has the impression length as great as 40% more than the 2 of 5 interleave. Only advantage is , it is a shorter impression length code on the printed image, if you were to compare the 2 of 5 non-interleave to either the Code 39 or the Coda bar.

HOW DISCRETE BAR CODES ARE MANUFACTURED :-- For Discrete Codes, there are several possible methods of printing Bar Code Sequential numbers through impact devices.

LETTER PRESS :-- This this the oldest, most reliable form of numbering. Because of the land heights used in Bar Code, most machines are over type-high . NOTE: you should select a letter press unit for which you can alter the bed to accept an over type-high letter press numbering machine. (Example: by definition, the moving bed of a cylinder letter press cannot be used for the Bar Code that is over type-high)

OFF-LINE RI41/B7BON ENCODERS :-- The ribbon encoder will allow production of various size continuous documents, you only need 1 or 2 Bar Code machines. NOTE:-you should select a ribbon encoder that will allow for a large land height to print the Bar Code image and especially allow for the proper ribbon transfer of the large Bar Code image.

WEB PRESSES AND COLLATORS :-- Even though there are obvious differences in the printing or finishing equipment selected, there are many common attributes that must be in place or modified, to print a good Bar Code image with the impact numbering devices. What follows are general guidelines for the proper preparation of your numbering tower in getting your press or collator " Bar Code Ready".

BAR CODE READY :-- Bar Code numbering on your press or collator is as simple as numbering off your Gothic tower. It is the initial preparation of the numbering tower, which will determine the quality of the printed image and production speed. This is a diagram of a typical numbering tower to which you can refer in order to make our explanation of "BAR CODE READY " easy to understand.

"BAR CODE READY ":- The quality of your equipment is critical. Our experience with our own units is excellent, and we urge you to make certain that all your numbering accessories are made by Leibinger. It will prevent more than half the problems that could occur. What follows are suggestions based on years of in –field experience. When these guidelines were used in conjunction with precision Leibinger equipment, the result was always trouble-free operation and perfect Bar Code imaging.

THE INK TRAIN :-- Usually we ask that the numbering tower is of MICR quality, doctor roller at least 50 durometer on a shore scale of (A), minimum of 2 each

distribution and oscillation or vibration rollers. This helps break down and smooth out the letter press ink. You should have less than 2 form rollers with a durometer of 35 on a Shore scale of (A). they should be rubber covered at least 3/8" to ½" thick and with a run out as close to 0.0015" as possible.

If you leave the specifications up to the roller manufacturer or to the OEM's there is a chance that you will end up with something less than the desired specifications. Softer than 30 durometer would put more ink on the machines, resulting in slower speeds and more frequent cleaning. Harder than 40 durometer would not leave enough ink on the steel wheels, resulting in light print contrast or voids, etc.

BEARING SUPPORT :-- On applications that are 2 and 3 streams wide or if you should have a wider press from side frame to side frame, should recommended one or more numbering shaft supports. This will help to increase your SFM and reduce numbering machine shaft deflection. Since every press is slightly different in configuration or design, the supports for the numbering shaft may also be slightly different.

Please Note :- To reach different form layouts it may be most useful to have the support made only 1-3/8" or less in total width. Furthermore, the brackets should be flexible enough to slide into different positions, once the bearing shaft suffort(s) are in set. You should be able to lock down the shaft support without placing pressure against the numbering shaft, either in an up or down direction.

IMPRESSION CYLINDER :-- Impression cylinder to accept rubber, sticky-backed blanket materials vs Impression cylinder accepting mylar blanket using reel rod lock up.

We have found that the best undercuts for bonded papers are usually around 0.010" to 0.020" using mylar blanket material to cover the impression cylinder. This is also more desirable of MICR check production.

The best undercut of NCR papers are usually around 0.035" to 0.037" using a polyfibron Market material by W.R. Grace Co. and a thin cover of Mylar to prevent the blanket's becoming contaminated from the chemicals in the paper.

From experience, we have found that if you must make a choice of a 0.010" to 0.020" undercut or an 0.035" to 0.037" and you do run check production, you should select the smaller undercut of 0.010"/0.020", this will allow both Bar Code and MICR check production.

--- ::GLOSSARY—BAR CODE TERMINOLOGY ::----

ALPHANUMERIC :-- The character set which contains letters, numbers and, usually, other characters such as punctuation marks and symbols.

APERTURE :- The opening in an optical system defined by a lens or baffle that establishes the field of view.

ASPECT RATIO :-- The relationship (usually in the form of a percentage) between the length of impression and required bar height.

BACKGROUND :-- the area surrounding a printed symbology, including the spaces and quiet zones.

BAR :-- The darker element of a printed bar code symbology.

BAR CODE :-- An array of parallel rectangular bars and spaces that together represent a single data element or character particular symbology. The bars and spaces are arranged in a predetermined pattern.

BAR CODE CHARACTER :--A single group of bars and spaces, which represent an individual number, letter, punctuation mark or other symbol.

BAR CODE DENSITY :-- The number of characters which can be represented in a linear unit of measure. Bar Code density is often expressed in characters per inch , when ICG is equal to 1x narrow element in discrete codes.

BI-DIRECTIONAL SYMBOL :-- A bar code symbology format, which permits reading in opposite scanning directions, successfully and independently.

CHECK DIGIT :-- A character included with a symbology whose value is used for the purpose of performing a mathematical check to ensure the accuracy of the read.

CODE :-- A set of unambiguous rules specifying the way in which data may be represented.

CONTINUOUS CODE :-- A bar code symbology where all spaces carry data within the character set. A bar code which does not have intercharacter gap (ICG).

DISCRETE CODE :-- A bar code or symbology where the spaces between characters, the intercharacter gap (ICG), is not part of the code.

ELEMENT :-- A single bar of space.

FIRST READ RATE :-- The percentage of correct readings, that will be obtained in one pass of the scanner over a given symbology set.

FIXED BEAM SCANNER :-- A stationary bar code scanner which uses a fixed (or stationery) beam of light, to read bar code symbology sets. The symbology must be moved through the light beam to the read.

HELIUM NEON LASER :-- The type of laser most commonly used in bar code scanners. It emits coherent red light at a wavelength of 633 NM.

INTERCHARACTER GAP (ICG):-- The space between (2) adjacent bar code characters in a discrete code.

LED :-- Light emitting diode. A semiconductor that produces light at a frequency determined by its chemical composition. The light source commonly used in a wand type readers.

MISREAD :-- A condition which occurs when the data output of a reader does not agree with the data encoded in the bar code symbology.

MODULE :-- The narrowest element (bar or space) in a bar code.

NAMOMETER :-- A unit of measure used to define the wavelength of light. Equal to 10 (to the 9^{th} power) meter.

NOMINAL :-- The exact (or ideal) intended value within a specified perimeter. Tolerances are specified as positive or negative deviations from this value.

Chinmoy Garai
Manager(TO)

UNCONDITIONAL PRAYERS
U will love to read this.....

Every day early morning a little girl would come to the temple and stand before the idol, close her eyes and with folded hands, murmur something for a couple of minutes. Then open her eyes, bow down, smile and go out running. This was a daily affair.

The temple Priest was observing her and was curious about what she was doing. He thought, she is too small to know the deeper meanings of religion, she would hardly know any prayers. But then what was she doing every morning in the temple?

Fifteen days passed and Priest now couldn't resist but to find out more about her behaviour.

One morning, Priest reached there before the girl and was waiting for her to complete her ritual. He placed his hand on her head and said, " My child, I have seen since the last fifteen days that you come here regularly. What do you do?"

"I pray," She said spontaneously. "Do you know any prayers?" asked Priest with some suspicion in his voice. "No" replied the girl. "Then what are you doing closing your eyes, every day?" he smiled.

Very innocently the girl said : " I do not know any prayer, but I know "a,b,c,d…. up to z." I recite it five times' and tell God that, I don't know your prayer, but it cannot be outside of these alphabets."

Please arrange the alphabets as you wish and that is my prayer." And she ran, jumping on her way out.

The Priest stood there dumbstruck, staring at her for a long time as she disappeared running in the wilderness.

This is The UNCONDITIONAL belief in God that we pray.

(K. Satyanarayana)

KIND HEARTED PERSON'S - PASSION AND COMPASSION

…….When I was young, my mom used to buy vegetables for the household, from a lady vendor who came to our doorstep every day.

On a particular Sunday, the vendor brought bundles of spinach. Her quote was, I think, one rupee per bundle. My mom's counter-bid was exactly half that figure: however, she promised that she will buy four bundles at that price. For a while, both were harping on one's own figure. The vendor politely declared that she doesn't even recover her cost at that price, loaded the basket on her head and walked away.

*After taking four steps ahead, the vendor turned back and shouted,``` *Make it 75 Paise a bundle*, ```and I will give it to you. My mom shook her head and stuck to her original 50 Paise, reiterating the theory of quantity discount. The vendor walked on.*

The two of them precisely knew each other's strategies. The vendor turned around, came back to our house, while my mom was waiting at the doorstep with a smug smile on her face.

The deal was clinched at my mom's bid. The vendor was sitting there as if she was in a trance. My mom took her time checking each bundle by gently tossing it by her right hand and examining each with a critical eye for quantitative and qualitative compliance.

From an initial short-listing of the bundles, she finally selected four bundles to her satisfaction, making that point clear to the fatigued vendor. She took the commodity and took her time and came out

with the payment in a collection of coins of small denominations.

The vendor took the money without even counting. As she got up, she swayed due to apparent dizziness. My mom held her hands and asked whether she hadn't had any food in the morning. The vendor said, "No Maa. With today's earnings only, I've to buy some rice, go home and make some."

My mom asked her to sit down, hurried inside and came back swiftly with a few chapattis & vegetables and offered to the vendor. Mom gave a bottle of water and started making some tea for the vendor. The vendor hungrily and gratefully ate the food, drank the water and finished the tea. Thanking my mom profusely; placed her basket on her head and went on to continue with her business.

I was puzzled. I told my mom, you were ruthless in bargaining for two rupee stuff, but were generous in offering food of a much higher price to that vendor.

*My Mom smiled and said, "My dear Child, there is no "**Kindness in Trading"** and there shall never be any "**Trading in Kindness"**!*

(K. Satyanarayana)

List of Empaneled Hospitals As on 03.02.2022

1	Anu's Dental Care, Chikadpally X Roads	22	Omni Hospitals, Dilsukhnagar
2	Yashoda Hospital, Somajiguda	23	Continental Hospitals, Gachibowli
3	Yashoda Hospital, Sec'bad & Malakpet	24	Udai Omni Hospitals, Nampally,
4	WIN VISION Eye Hospital, Begumpet	25	Aditya Hospitals, Uppal
5	Medi cover Hospital, Madhapur	26	Poulomi Hospitals, Sec'bad
6	Xenia Hospitals, ECIL x Roads	27	Dr.Agarwal Eye Hospital, Punjagutta
7	Aware Glenagle Global Hospitals, L.B.Nagar	28	Care Hospitals, HiTech City
8	Sri Sri Holistic Hospital	29	Care Hospital, Banjara Hills
9	Lotus Hospitals, Lakdikapul, Kukatpally, L.B.Nagar	30	Care Hospital, Nampally
10	KIMS, Sec'bad	31	Rukkus Dental Hospitals, Barkatpura
11	Swarup Eye Centre, Abids	32	The Deccan Hospital, Somajiguda
12	Kamineni Hospital, L.B.Nagar	33	Kamineni Health Services, King Kothi
13	Sathya Kidney Centre, Himayathnagar	34	Gurunanak Care Hospital, Musheerabad
14	Srikara Hospitals, Secunderabad	35	Centre for Sight Eye Hospital, Banjara Hills
15	Pragna Hospitals, Punjagutta	36	Virinchi Hospitals, Banjara Hills
16	Omega Hospitals, Banjara Hills	37	Sunshine Heart Institute
17	Citizens Hospitals, Serlingampally	38	Sunshine Hospitals, Sec'bad
18	Sai Sanjeevini Hospitals, Kothapet	39	Maxivision Laser Centre pvt. ltd., Somajiguda
19	Prime Hospitals, Ameerpet	40	Medicover Hospitals (erstwhile Maxcure Hospitals), Hyderabad.
20	Vijaya Diagnostic Centre, Himayatnagar	41	Prathima Hospitals, Kukatpally & Kachiguda
21	Olive Hospitals, Mehdipatnam	42	Dental House, Ameerpet

प्रतिभूति मुद्रणालय , राजभाषा अनुभाग

जनवरी/ January 2022

सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	रवि
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30
31						

फरवरी/ February 2022

सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	रवि
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28						

मार्च / March2022

सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	रवि
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

अप्रेल / April2022

सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	रवि
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	

मई/ May 2022

सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	रवि
30	31					1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

जून / June 2022

सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	रवि
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30			

जुलाई/ July 2022

सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	रवि
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

अगस्त / August 2022

सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	रवि
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

सितम्बर/ September 2022

सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	रवि
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30		

अक्तूबर/ October 2022

सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	रवि
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30
31						

नवम्बर/ November 2022

सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	रवि
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				

दिसम्बर 2022

सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	रवि
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

प्रतिभूति मुद्रणालय अवकाश/त्योहारे

15 जनवरी/ January	मकर संक्रांती/ Makara Sankranti	03 मई/ May	ईद(रमादान)/Eid –Ul-Fitr
26 जनवरी/ January	गणतंत्र दिवस/ Republic Day	09 अगस्त/ August	मुहर्रम/ Muharam
15 फरवरी/ February	हजरत अली जयन्ती/ Birthday of Hazrat ali	15 अगस्त/ August	स्वतंत्रता दिवस/ Independence Day
02 मार्च/ March	महा शिवरात्री/ Maha Shivarathri	31 अगस्त/ August	विनायक चतुर्थी/ Vinayaka Chavithi
18 मार्च/ March	होली/ Holi	02 अक्तूबर/ October	गांधी जयन्ती/ Gandhi Jayanti
02 अप्रेल/ April	उगदी/ Ugadi	04 अक्तूबर/ October	महानवमी/ Maha Navami
14 अप्रेल/ April	अम्बेदकर जयंती/ Ambedkar Jayanti	05 अक्तूबर/ October	विजया दशमी/ Vijaya Dasami
15 अप्रेल/ April	गुड फ्राइडे/ Good Friday	25 अक्तूबर/ October	दीपावली/ Deepavali
29 अप्रेल/ April	शब-ए-कदर/ Shab-E-Qadar	24 दिसम्बर/ December	क्रिसमस इव/ Christmas eve

स्टैच्यू ऑफ इक्वलिटी (Statue of Equality),हैदराबाद

11वीं सदी के संत श्री रामानुजाचार्य की 216 फुट ऊँची दुनियाँ की बैठी अवस्था में द्वितीय सबसे ऊँची प्रतीमा ।

प्रतिभूति मुद्रणालय
(भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड की इकाई)

SECURITY PRINTING PRESS
(A unit of Security Printing and Minting Corporation of India Ltd)